मोहिनी

वाणी

श्री श्री गदाधरभट्टजी की

श्रीनित्यानन्द गौरचन्द्रौ

जयतः

(सर्वाधिकारसुरक्षित हैं)

हरि मोहन प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर।

२००० पंचमी

मूल्य ॥)

प्रकाशक:—
कृष्णदास
कुसुमसरोवर (गोवर्द्धन)

दो शब्द

श्री श्री गदाधरभट्टजी का स्थान व्रजरसमाधुरी में छके हुए अनन्य रसिक भक्तों तथा कवियों में बहुत ऊँचा है। आप परोपकार की मूर्ति और श्रीमद्भागवतग्रथ के अनूपम रंगीले रसीले वक्ता थे। आप श्री गौड़ेश्वरसम्प्रदायानुयायी थे। आपका परिचय, भक्तमाल ग्रथकर्ता श्री नाभाजी ने इस प्रकार दिया है।

गुन निकर "गदाधरभट्ट" अति सबहिन को लागे सुखद॥
सज्जन, सुहृद, सुशील, बचन आरज प्रति पालय।
निमेत्सर, निहकाम, कृपा करुणाकौ आलय॥
अनन्य भजन दृढ़ करनि धरयो बपु भक्तनि काजै।
परम धरम कौ सेतु, विदित वृन्दाबन गाजै॥
भागौत सुधा बरषे बदन काहू कों नाहिन दुखद।
गुन निकर "गदाधर भट्ट" अति सबहिनकों लागे सुखद॥

तथा भक्तमाल के टीकाकार प्रियादासजीने कवित्त छन्दोंमें विस्तार पूर्वक श्रीभट्टजूकी रहनी गहनी पर इस प्रकार प्रकाश डाला है। कवित्त-'श्याम रंग रंगी" पद सुनि के गुसाईजीव पत्र दे पठाये उभै साधु वेगि धाये हैं, रैनि बिन रंग कैसे चढयो अति सोच बढयो कागद में प्रेम मढ्यो तहाँलेके आये हैं।

पुर ढिग कूप तहाँ बैठेरस रूप लगे पूछवेको, तिन्ही सों नाम ले बताये हैं, रहो कौन ठौर सिरमोर वृन्दावन, नाम सुनि, मुरछाइ गिरे प्रान पाये हैं॥ काहू कही "भट्ट श्रीगदाधरजू" एई जानी मानौ उही पाती चाह फेरि कै जिवाये हैं। दियो पत्र हाथ लियो,

सीस सौं लगाय चाय, बाँचत ही चले बेगि वृन्दावन आये हैं। मिले श्री गुसाईं जू सों, आँखें भरि आईं नीर सुधि न शरीर धरि धीर वहीं गाये हैं। पढ़े सब ग्रन्थ संग नाना कृष्ण कथा रंग रस की उमंग, अंग अंग भाव छाये हैं॥

आपने प्रथम अपने घर में ही 'सखी हो श्याम रंग रंगी। देख विकाय गई यह मूरत सूरत माहिं पगी" यह पद बनाया। श्री वृन्दावन में इसको किसी साधुमुख से सुनकर श्री श्रीजीव गोस्वामीपाद ऐसे चकित और मोहित हुए कि आपने एक पत्र लिखा अनाराध्य राधापदाम्भोजरेणु मनाश्रित्य वृन्दाटवीं तत्पदांकाम्। असम्भाष्य तद्भावगम्भीरचित्तान् कुतः श्यामसिन्धो रसस्यावगाहः

भाव यह है कि जिसने श्री राधिका के चरण कमल रज की आराधना नहीं की, तथा श्री राधाचरणकमलांकित श्री वृन्दावन के आश्रित नहीं हुआ और राधाभावरस जानने वाले रसिकों का संग नहीं किया तो वह कैसे श्री श्यामरस रूप समुद्र में गोता लगा सकता है। इस पत्र को लेकर दो साधु श्री भट्टजी महाराज के पास आए जो एक कूप के ऊपर बैठे दाँतुन कर रहे वे श्री भट्टजी से पूछने लगे कि गदाधर भट्टजी कहाँ पर रहते हैं। श्री भट्टजी महाराज ने पूछा कि "आप कहां रहते हैं?" सन्तों ने उत्तर दिया "शिरमोर वृन्दावन धाम में" श्री वृन्दावनधाम का नाम सुनते ही भट्टजी प्रेम से मूर्छित हो गिर पड़े। आपकी दशा देख उन सन्तों से किसी ने कहा कि आपही गदाधरभट्ट हैं। तब उन सन्तों ने कहा कि हम आपके लिये पत्र लेकर आये

हैं। यह सुनकर वे उठे। पत्र ले शीश और नेत्रों से लगाया। प्रेमानन्द से पढ़ा और सीधे श्रीवृन्दावन को चल दिये। श्रीजीव गोस्वामीजी के साथ मिलकर आपने श्री भागवतरसका आस्वादन किया। आपके मधुर भाषण का श्रोताओं पर बड़ा प्रभाव पड़ता था। बहुत लोग संसारी सुख को तुच्छ समझ कर भागवत रंग में रंग जाते थे और सहज में ही मूर्छादिक अष्ट सात्विक भाव उदय हो जाता था एक बार आपके यहाँ एक चोर आया, घर की सब संपत्ति लेकर एक बहुत बड़ी गठरी बांधी, जिसको उठाने में वह असमर्थ हुआ। भट्टजी महाराज जो यह सब लीला देख रहे थे चोर के पास आये और चुपचाप गठरी उठादी। चोर पर आपकी दया का बड़ा भारी प्रभाव पड़ा चरणों में लोट गया और आपका शिष्य हो गया। सच है महानुभावों के चरित्र लोकोत्तर होते हैं। आज उनहीं श्री भट्टजी महाराज की परम रसीली मोहिनीबाणी रसिक महानुभावों के आस्वादनार्थ मुद्रित हो गई है। जिसका श्रेय श्री कुसुम सरोवर निवासी श्रीबाबजी महाराज श्रीकृष्णदासजी को है आपका दुष्प्राप्य ग्रंथों को खोज निकालना और उनका प्रकाश करना और कराना मुख्य काम है। भिंड (ग्वालियर) निवासी भक्त शिरोमणि मुंशी गोपालसहाय आत्मज गौरनिष्ठप्राण बाबु जगमोहन लालजी जज हाई कोर्ट को अनंत कोटि धन्यवाद है कि जिन की परम उदार आर्थिक सहायता से इस ग्रंथ का मुद्रण ऐसे समय में हो सका जब "महँगाई" का पूर्ण साम्राज्य है। इस उदारता के लिये वैष्णव

जगत आपका आभारी रहेगा। भगवान ऐसे उदार चरित्र प्रेमी सज्जनों को अपनी अनुपम कृपा का भाजन बनाये रक्खें।

विनीत:—

गोविन्दप्रसाद श्रीवास्तव

प्रोफेसर, महाराजा कालेज (जयपुर)

❀ शुद्धि पत्रम् ❀

अशुद्धि	शुद्धि	पृ०	प०
फ़ाग	फाग	१८	१०
स्तुर्त्त	स्मर्त्त	११	४
हंसा	हंस	१८	१०
जलक	झलक	२३	१२
नाप	ताप	२३	२
बार	बर	२३	२०
कंटकि	कण्ठकी	२६	७
बक	बर	१७	१६
राम	रम	३६	३
मिटयां	मिटयो	४८	११
बिगी	बिरंगी	५५	१
गुन	गान	६१	१
गाविन्द	गोविन्द	१२	१६

निवेदन

यह शुष्कायित सुकण्टकित ज्ञानकर्मादिरहित शुद्ध भक्ति विवर्त्त महाप्रेमरसमदिरापानोन्मत्त, शुद्धसत्व, बलरामतत्व, श्री श्री नित्यानन्दप्रभुजीके कृपासे- कलिपावनावतार करुणावरुणालय ब्रह्मरुद्रादिसुदुर्ल्लभ प्रेमभक्ति महाधनप्रदानासक्तचित्त, महाभाव रसराज स्वरुप श्री राधा राधाकान्त मिलिततत्व, " कृष्णवर्णं त्विषा-कृष्णं सांगोपांगास्त्रपार्षदम्। यज्ञैः संकीर्त्तन प्रायैर्यजन्तिहि सुमेधसः।" इति भागवतीय पद्य से तथा आगमनिगमकृतप्रमाणितअवतारसत्व, श्रीव्रजेश्वरी व्रजेश्वर अवतारुप श्रीशचीदेवी जगन्नाथमिश्र पुत्र, कलिकाल कवलित सर्व साधन रहित जीवों के उद्धारार्थ सर्वसाधन तिरस्कृत प्रकाशित नाममहासत्र, लक्ष्मीकान्त, श्रीमन्महाप्रभु गौरचन्द्रजू के-कृपापात्र तथा परम पार्षदख्यात, तन्मतप्रचार पर-मोद्भट श्रीरघुनाथ भट्टजू के कृपापात्र श्रीगदाधर भट्टजू के हृदय सरोवर में भाव रूपी सूर्य्य किरण से प्रफुल्लित वाणी रुपी कमलों का शतशत मकरन्दधारा रसिकभ्रमर परिपोषणार्थे प्रकाशित है। अतः सरस भावुक प्रेमी रसिकजन जिह्वारुपी चषकपात्र में रख कर सदा आस्वादित करे। भावार्थ यह है आज श्रीगदाधरभट्टजी का रचित सरस सानुप्रास युक्त वाणीयां प्रकाशित हुई है। भट्टजू के जो कुछ फुटकरपद यहाँ तहाँ हस्त लिखित पुस्तकों से मिले वे सब एकत्र संचय करके धारानुयायी रक्खे गये है। हृदय में

आशा यह है कि भट्टजी का विशाल जीवनचरित्र भी समयान्तर में प्रकाशित हो। इस अभिलाषा की श्रीभट्टजी के स्थान वा गद्दी पर (वृन्दावन पुराणेशहर अटखम्भा श्रीराधावल्लभजी मन्दिर के पास) विराजित श्रीगौरचन्द्रनिष्ठ श्रीगोवर्द्धन भट्टजी उपनाम छोटूनलालजू के कृपा से पूर्ती होगी। यहाँ पर गदाधरभट्टजी के प्रकाशित तथा आराधित सर्वेश्व श्री श्री मदनमोहन जू की श्री मुर्त्ति विराजित हैं। उनके श्री चरण कमल में शत २ कुसुमाञ्जलि अर्पण पूर्वक प्रार्थना यह है कि आप अपने कृपा पात्र भट्टजू के सरस वाणी रुपी सुधा जो कि हृदयाकाश में रखे हुए हैं उसको भक्त रसिक हृदय क्षेत्र में सदा के लिये अंखडित भाव से सरस बरसावें।

इतिः—

वैष्णव दासानुदास

कृष्णदास

श्री श्री गौरहरिर्जयति ।

अथ योगपीठ

श्री गोविन्द पदारविन्द सीस सिरनाऊं ।
श्री वृन्दावन विपिन मौलि वैभव कछु पाऊं ॥ १ ॥
कालिन्दी जहां नदी नील निर्मल जल भ्राजै ।
परमतत्व वेदान्त वेद्य इव रूप विराजै ॥ २ ॥
रक्त पीत सित असित लसित अम्बुजवन सोभा ।
टोल टोल मदलोल भ्रमत मधुकर मधुलोभा ॥ ३ ॥
सारस अरु कलहंस कोक कोलाहल कारी ।
अगनित लखन पचि जात कहि नहि मति हारी ॥ ४ ॥
पुलिन पवित्र विचित्र रचित नाना मनि मोती ।
लज्जित ह्वै शशि सूर निरखि निसिवासर जोति ॥ ५ ॥
कंचन कलित गिलाइ लाइ बांधे मनि कूलन ।
तीर तीर चतुर सुचारु नाना द्रुम मूलनि ॥ ६ ॥
नव नग सोभा विविध भाति नव पल्लव पत्रा ।
रंग रंग के फूल मनहुं विधि निर्म्मित चित्रा ॥ ७ ॥
कल कलधौत लता प्रतान तिनसौं लपटाने ।
वर पराग के पुंजकुंज परत न पहिचाने ॥ ८ ॥
कहूं कर्पूर पराग कहू कुंकुम के पंका ।
कहुं फटिक स्थल विमल मनहुं अकलंक मयंका ॥ ९ ॥
कहुं अमृत जलभरे विपुल पद्माकर ओडे ।
मरकत धसी किरन मनौ दुर्वाकुंर बौडे ॥१०॥

इहि विधि चिंतामनिन भूमि संतत तहं सोहै ।
षटरितु सेवत नित्त कहत उपमाको को है ॥११॥
जहां केकी कुल नित्त तहां पिक पंचमगावत ।
परत भृंग उपंग सवद उघटत पारावत ॥१२॥
कीर प्रशंसा करत झरत निर्झर मृदंग धुनि ।
रीझ रीझ सिर धुनत वृक्ष संगीत रीत सुनि ॥१३॥
थिरचर मन उल्लास विलास विविध तंह दरसै ।
मंद पवन वस परसि लता कुसुमांजुलि वरसै ॥१४॥
नित्यानन्द कदम्ब केलि वृन्दावन सोभा ।
कोटि कोटि सुरराज रंक ह्वै लागत लोभा ॥१५॥
कल्पद्रुमनकी छांह माह मनि मंडप भारी ।
जगमग २ जोति होति सोभा सुखकारी ॥१६॥
ता मंडप मह योगपीट पकंज रुचिलागि ।
ताके मन में उदय होत जो कोऊ बडभागि ॥१७॥
ताके पत्र विचित्र सहस्र मध्य किंजल्कै ।
पद्म राग की भांति अग्र मुक्ता मणि झलकै ॥१८॥
कनक वरन कर्निका कील वज्रन की सोहै ।
मन्त्र दसाच्चर रूप कहन महिमाको को है ॥१९॥
वनिताजनगन कोटि कोटि संतत ता माहीं ।
उपमाको रति रमा उमा रम्मादिक नाहीं ॥२०॥

बरन बरन अम्बर सुरंग कंचुकि तन गाढ़ी ।
मंजन अंजन तिलक हार सोभा सुठि बाढ़ी ॥२१॥
अंग अंग सोभा समूह श्रेणि रुचिवाढ़ी ।
मनहुं माधुरी सिंधुहूते अवहीं मथिकाढ़ी ॥२२॥
सुन्दर नव युवराज बिराजत तिनहि संभारी ।
रुप अनुपम कथन काज सुरसुति पचिहारी ॥२३॥
नील जलदतन स्याम धाम अभिराम पीत पट ।
सिखि सिखंड सेखर ललाट रहीं छुटि अलकलट ॥२४॥
विविध सुदेस सुन्दर सुरंग कुंकुम तमाल दल ।
ललित लोल डोलत कपोल विवित मनि कुंडल ॥२५॥
भृकुटि भंग लघु लघु तरंग लोचन सुकोकनद ।
चपल चारु चितवनि चिताइ गत होत मदनसद ॥२६॥
शुकनासा मुक्ता प्रकाश उपमा मन मेरे ।
मनहु असुर गुरु आय अंकवैठ्यौ विधुकेरे ॥२७॥
अधर मधुर अरुनिमा जोर बंधुक न पावै ।
विद्रुम विवं जवा प्रसून ऊनत्ता जनावै ॥२८॥
मुक्ता हीर अनार कुंद दंतनपर वारौं ।
कंबुकंठ कौस्तुभमयूख रुचि कहत न पारौं ॥२९॥
गज सुंडाकृति वाहुदंड केयूर रहे वन ।
मधि हीरा पट कौन कौन मनि कहै औरगनि ॥३०॥

पहोचनि पहोंची वर जराय मुद्रिका रही फवि ।
करपल्लव नख जोति जात नक्षत्र पंक्ति दवि ।।३१।।
कुंददाम वनदाम दामगुंजा मनिको उर ।
तार हार विस्तार चारु सुभ दरत हिये पर ।।३२।।
स्तन दक्षिण श्रीवत्स वाम सोहै श्रीरेखा ।
मधि चौकीकी चमक काहि गृह थके असेषा ।।३३।।
त्रिवली वलित रोमावलि नाभि आवर्त्त समाना ।
चक्रदल दल आकार उदर घटना मन माना ।।३४।।
चित्रित अंग पटीर कटीतट घटी सुहाई ।
मंद पवन वस थरहराति प्रमुदा मधि आई ।।३५।।
मनि किंकिनि गुन तडित दामसम वनी नितंवन ।
उरु जानु जंघा सुगुल्फ सोभा अवलम्बन ।।३६।।
नूपुर रव जन झननकार गुरु सिक्ष्य हंसकुल ।
वार वार अभ्यास करत हारे न लही तुल ।।३७।।
जल कमल स्थलकमल जीति श्री वस करि राखी ।
कविवर वचन प्रमाण मानि बोलत है साखी ।।३८।।
मुरलीधर वरअधर धर मुरली अति नीकी ।
नादामृत वरसाय हरत सुधि वुधि सबही की ।।३९।।
वाम भाग सौभागसीम श्रीराधा रमनिमनि ।
ताके नवनव प्रीति राग रहे पियतन मनसनि ।।४०।।

अहिकुल अलिकुल वरहिकुल केस वेस लखिलाजि ।
रहे रसामहि कमलमहि निरजन बन मह मोजि ॥४१॥
बदन सदन आनन्द चंद चारुता लजानी ।
नैन मैन सर पैन भौंह धनुहीं जनु तानी ॥४२॥
मृगमद तिलक ललाटपट ताटंक श्रवनवनि ।
खुलि खुटिला झुल मुलो अलक झलमलत महामनि ॥४३॥
नासा मोती अधर भासता सित थरहरई ।
दसन दाडिमी बीज मंजिता बोल मुखरई ॥४४॥
चिबुक चारु रुचिरुचिर चकित प्रीतमछवि जो है ।
स्यामबिंदु सुखकन्दनदनंदन मन मोहै ॥४५॥
नील सारसोभा अपार वेनी बनी भारी ।
गौरगात गाती सुजात मोहित रतनारी ॥४६॥
कंठश्री मुक्तान माल चौंकी चमकती ।
भुज मृणाल नवलाल वलित वलयनकी पंक्ती ॥४७॥
मनिमुद्रिक केयूर कमल करपल्लव राते ।
नखरसिखर मानिक्य स्याम अन्तर अरुझाते ॥४८॥
रसना रसद निनाद बाद मनमथसौं ठान्यो ।
रंभाखंभ समान जंघ सुन्दर मनमान्यो ॥४९॥
चरन कंज मंजीर हंस कूजित समवाजे ।
नखमानिक मद जीति रागतल अधिक विराजै ॥५०॥

यह विधि युगलकिशोर ओर संतत तँह सोभै ।
भावसहित भावना करत कहि को नहि लोभै ॥५१॥
जोइहि विधि निसि द्योस चलत बैठे अरुठाढे ।
करहि विचार विकार और तौवत मनवाढ़े ॥५२॥
ध्यानानन्द मकरन्दसार जिनके मनमाते ।
भवदव दहन समूह तिनहि लागत नहिं ताते ॥५३॥
श्री वृन्दावन योगपीठ गोविन्द निवासा ।
तहा श्री गदाधर चरन सरन सेवाकी आसा ॥५४॥

इति श्री गदाधरभट्टजी कृत योगपीठ वर्णन सम्पूर्णम्

॥ उपदेश ॥

मुंचरे मुंच माया सुखे यत्नं ॥
मृगय गोकुलकुलाधीशकुलरत्नं ॥ १ ॥
मूढ मायात दुराशा पिशाची वशे ।
मित्र मज्जय मनः कृष्णलीलारसे ॥ २ ॥
किं लब्धं त्वया कृपण जन रंजने ।
किमिति रमसे न निजभक्त भयभंजने ॥ ३ ॥
हरिविमुखसंगमे किं भजसि रागं ।
वरय हरिदासपदपंकजपरागं ॥ ४ ॥
कलय चेतसि चिरं नीलघनसुन्दरं ।
पीतवसनं सुभगनागरपुरन्दरं ॥ ५ ॥

गोपगणवेष्टितं नैचिकीचारकं ।
सुरसुखद चेष्टितं दनुज कुल मारकं ॥ ६ ॥
द्विषामपि मुक्तिदं मुक्तिसेवित पदं ।
वंशिकाविवशगोपीजनानन्ददं ॥ ७ ॥
मावृथा चिन्तनं मा वृथालापं ।
कुरुगदाधर जहिहि मनसि परितापं ॥ ८ ॥

॥ रागविभास ॥

कबै हरि, कृपा करिहौ सुरति मेरी ।
और न कोऊ काटन कौं मोह बेरी ॥ १ ॥
काम लोभ आदि ये निर्दय अहेरी ।
मिलि कै मन मति मृगी चहूँघा घेरी ॥ २ ॥
रोपी आइ पास पासि दुरासा केरी ।
देत वोही में फिरि फिरि फेरी ॥ ३ ॥
परी कुपथ कंटक आपदा घनेरी ।
नैक हो न पावति भजि भजन सेरी ॥ ४ ॥
दंभ के आरंभ ही सतसंगति डेरी ।
करै क्यों गदाधर बिनु करुना तेरी ॥ ५ ॥

॥ विनय के पद ॥

कहा हम कीनो नरतन पाइ ।
हरि परितोषण एको कबहुँ बनि आयो न उपाइ ॥ १ ॥

हरि हरिजन आराधि न जानें कृपण वित्त चित लाइ ।
वृथा विषाद उदर की चिंता जनमहि गयो विताइ ॥ २ ॥
सिंह त्वचाको मढ्यो महापशु खेत सवनको खाइ ।
एसे ही धरि भेष भक्तको घरघर फिरयो पुजाइ ॥ ३ ॥
जेसें चोर भोर के आयें इत चितवत वितताइ ।
एसे ही गति भई गदाधर प्रभुकि न करहु सहाइ ॥ ४ ॥

ब्रजजनसम्बन्धिपद ॥ रामकली ॥

दधि मथति नंद नरिंद रानी करति सुत गुन गान ।
नील नीरद अंग दिव्य दुकूल बर परिधान ॥
केस कुसुमनि किरनि मणि ताटंक झलकत कान ।
स्वेद कन गन बदन बिधु पर सुधा बिंदु समान ॥
नेत करषत हरष बरषत बलय किंकिनि क्वान ।
पय पयोधर श्रवत चातक कृष्ण पिवत निदान ॥
सहसु आनन कहि सकै नहिं जासु भाग्य बखान ।
जगतबंद्य गोविंद माता गदाधर करि ध्यान ॥ ४ ॥

———

वन्दो जशोदा पदकमल ।
जिनहि चितत जाहि मिटि कलिकालके सब समल ॥
ज्ञान अरु विज्ञानयुत तिनि ध्यानहूँते दूरि ।
ताहि जौ लै गोद बैठाति अंगधूसर धूरि ॥

सभामैं कुरुराजकी रिषिराज कियो बखान ।
कमलभव कमलालया भव नहिन महिमसमान ॥
जगतबंध विमोचकारण जासु नामाभास ।
सोइ डोलतुभजे जाके बांधिबेके त्रास ॥
कृष्णचातकहेत जाकी पयोधर पयवृष्टि ।
गदाधर बलिजातु चाहत कृपा कोमल दृष्टि ॥ ५ ॥
जय श्रीगोकुलदेवि यशोदे । जीवातुकहरिबालविनोदे ॥
बन्धविमोचनबन्धनदक्षे । कृतलोकत्रयरक्षकरक्षे ॥
सततविहितविश्वंभरभरणे । कृतकलिमलहरतनुमलहरणे ॥
स्तन्यामृतसन्तर्पितकृष्णे । कृष्णाननमधुरिमणि सतृष्णे ॥
उत्संगारोपितजगदयने । अंजननिचितनिरंजननयने ॥
दिव्यदुकूलावृतमृदुदेहे । रुचिरञ्जितगोकुलपतिगेहे ॥
अपराधिन्यपि कोपविहीने । करुणामृतवर्षिणि मयिदीने ॥
कमलभवादिसुदुर्लभभाग्ये । त्रिभुवनविदितमहासौभाग्ये ॥
वितरगदाधरमनुनिजदास्यं । भावय मे श्रुतिततिभिरुपास्यं ॥ ६ ॥

॥ नन्दजी का पद ॥

बन्दो नन्दजूके पाइ ।
अखिललोक आधीस जाकी हैं चरावत गाइ ॥
निगमसार विचारदुर्गम उमापति विश्राम ।
लह्यौ जाके नामतो तिहि नन्दनन्दननाम ॥

पवन पावक इन्दु अनिमिष सुर अज्ञाकरत ।
सुप्रभु जाकी पीठि पादुक लैलै आगै धरत ॥
जासुके सनमंधतें भवबन्धते निस्तार ।
तासुके कटिदामको नहि और छोरणहार ॥
नटति मायानटी भृकुटी माँइ सकति न टारि ।
ताहि जाकै गांमउकी चुटकनि नचावहि नारि ॥
और मम सम दीन उनि सम नहि और उदार ।
क्यौं न करत गदाधर हि निजद्वारको परिचार ॥ ६ ॥

वन्देनंदव्रजजनवृन्दं । कृष्णप्रेमलतामृदुकन्दं ।
कर्त्तुं कृष्णकलानिधिधयनं । चारुचकोरीकृतनिजनयनं ॥
कृष्णगुणानुकथनमविरामं । विदधदपारसुखैर्गतयामं ।
जीवातुकनिमनन्दतनूज । आगमतंत्रप्रकाशितपूजं ॥
दनुतनुजानामपिभवतरये । प्राणधनादियदीयंहरये ।
हरिरपिदृष्ट्वा विषमाभारं । अकृत यदर्थं शैलोद्धारं ॥
अपिवदनलमपि कृततत्कदनं । प्राविशदघदनुजाधमवदनं ।
यत्पदरजसामभिषेकायं । लिप्सासमजन्यधिकाकायं ॥ ८ ॥

॥ बधाई के पद (राग मारु) ॥

आज कहूँ ते या गोकुलमें अद्भुत बरखा आई हो ।
मणिगण हेमहीर धाराकी व्रजपति अति झर लाई हो ॥
वानी वेद पढ़त द्विज दादुर हिये हरखि हरियारे हो ।
दधिघृत नीर छीर माना रंग बहि चले खार पनारे हो ॥

षटह निसान भेरि सहनाई महा गरजकी घोरें हो ।
मागध सूत वदत चातक पिक बोलत बंदी मोरे हो ॥
भूषन वसन अमोल नंदजू नरनारिन पहराये हो ।
शाखा फल दल फूलन मानों उपवन झालर लाये हो ॥
आनन्दमरी नाचत व्रजनारी पहरे रंग रंग सारी हो ।
वरन वरन बादरन लपेटो विद्युत न्यारी न्यारी हो ॥
दरिद्र दावानल बुझे सबनके जाचक सरोवर पूरे हो ।
बाढी सुभग सुजसकी सरिता दुरित तीर तरु चूरे हो ॥
उन्हयो ललित तमाल बाल एक भई सबन मन फूल हो ।
छाया हित अकुलाय गदाधर तक्यो चरनकी मूल हो ॥ ७॥

॥ ध्रुपद ॥

श्री गोविद पदपल्लव सिर पर विराजमान,
कैसे कहि आवै या सुख को परिमान ।
ब्रज नरेस देस बसत कालानल हू न त्रसत,
बिलसत मन हुलसत करि लीलामृत पान ॥
भीजे नित नयन रहत प्रभु के गुण ग्राम कहत,
मानत नहिं त्रिबिध ताप जानत नहिं आन ।
तिनके मुख कमल दरस पावन पद रेनु परस,
अधम जन गदाधर से पावैं सनमान ॥ ४ ॥

॥ धनाश्री ॥

हौं ब्रज मागनोंजू । ब्रजतजि अनत न जाऊंजू ॥
बड़े बड़े भूपति भूतलमें दाता सूर सुजानजू ।
कर न पसारों सिर न नवाऊं या ब्रजके अभिमानजू ॥
सूरपति नरपति नागलोकपति राजा रंकसमानजू ।
भांति भांति मेरी आसा पुजवत ए ब्रजजनयजमानजू ॥
में वृतकरिकरि देवमनाये अपनी धरनि संयूतजू ।
दियो है विधाता सबसुखदाता गोकुलपतिके पूतजू ॥
हौं अपनों मनभायो लैहौं कत वाराखत बातजू ।
औरनकौं धनघनज्यौं बरषत मोचितवत हसिजातजू ॥
अठसिधि नवनिधि मेरे मन्दिर तुवप्रताप ब्रजईसजू ।
कहि कल्यान मुकन्दतात करकमलधरो मम सीसजू ॥ ५ ॥

॥ दण्डक ॥

जय महाराज ब्रजराज कुल तिलक,
गोविन्द गोपीजनानन्द राधारमन ।
नंदनृपगेहिनी गर्भ आकर रतन,
सिष्ट कष्टद धृष्ट दुष्ट दानव दमन ॥
बल दलन गर्व पर्वतविदारन,
ब्रज भक्त रच्छा दच्छ गिरिराज धरधोर ।
विविधखेला कुसल मुसलधर संग लै,
चारु चरणांक चित तरनि तनया तीर ॥

कोटिकंदर्पदर्पापहर लावन्यधन्य
वृन्दारन्यबन्यभूषनमधुर ।
मुरलिका नाद पीयूषनिर्झर महानंदन
विदित सकल ब्रह्म रुद्रादि सुर ॥
करु गदाधर विषै वृष्टि करुना दृष्टि
दीन को त्रिविध संताप ताप तपन ।
मैं सुनी तुव कृपा कृपन जन गामिनी
बहुरि पैहै कहा मो बराबर कवन ॥ ४ ॥

गोकुलानंद गोपीजनानंद श्रीनन्दानन्द नयनानन्द प्यारे ।
गिरिराजउद्धरन सुरराजमददहरन वदनपरदुजराजकोटिवारे ॥
गोपनृपगेहिनीगर्भआकररतन राधिकाकंठभूषणविलासी ।
असुरलोचनअगोचरमहामहिम निजजनकरामलपरब्रह्मरासी ॥
गजराजधीरगति मृगराजविक्रमी रसराज रसरसिक बनबिहारी ।
भक्तजनभयहरनचरन अशरणशरण सकलसुखकरण दुखदोषहारी॥
रूपबलकोटिकन्दर्पदर्पापहरहरध्यातपदकमलविश्ववंधो !
नामआभासअघरासिविध्वंसकर सकलकल्याणगुनग्रामसिन्धो॥४॥

नामके पद (भैरवी)

अघ संहारिनि अधम उधारिनि,
कलिकाल तारिनी मधु मथन गुन कथा ।
मंगल विधायिनी प्रेम रस दायिनी,

भक्तिअनपायिनी होइ जिय सर्वथा ॥
मथि बेद गथि ग्रंथ कथि व्यासादि,
अजहुँ आधुनिक तन कहत हैं मति जथा ।
परमपद सोपान करि गदाधर पान,
आन आलाप तें जात जीवन वृथा ॥२॥

आसावरी

है हरि तें हरिनाम बड़ेरो । ताकों मूढ़ करत कत झेरो ॥ ध्रुं ॥
प्रगट दरस मुचकुन्दहिं दीन्हों, ताहू आयुसु भो तप केरो ।
सुत हित नामअजामिल लीनों, या भव में न कियो फिरि फेरो ॥
पर अपवाद स्वाद जिय राच्यौ, वृथा करत बकवाद घनेरो ।
ताको दसयों अंस गदाधर, हरि हरि कहत जात कह तेरो ॥२॥
करि है कृष्ण नाम सहाइ ।
अधमता उर आनि अपनी मरन कत अकुलाइ ॥
अधम अगणित उधरे तव कहत संसार ।
कब न उद्यम आपनें करि सक्यों निजु निस्तार ॥
नैंकु ही धों करिभरोसो बसत जाके गाँउ ।
क्यौं सु ममता छाडि है लै जियत जाको नाँउ ॥
विरद विदत बुलाइ बहुत कहरि नधरि हें लाजु ।
तो गदाधर निगम आगम सब वकत वेकाजु ॥ ४ ॥

सारंग

हरि हरि हरि हरि रट रसना मम ।

पीवति खाति रहति निधरक भई, होत कहा तोकों स्रम ॥
तैं तो सुनी कथा नहिं मोसे, उधरे अमित महाधम ।
ग्यान ध्यान जप तप तीरथ ब्रत, जोग जाग बिनु संजम ॥
हेम हरन द्विज द्रोह मान मद, अरु पर गुरु दारागम ।
नाम प्रताप प्रबल पावक के, होत जात सलभा सम ॥
इहि कलिकाल कराल व्याल बिष, ज्वाल विषम भोये हम ।
बिनु इहि मंत्र गदाधर के क्यों, मिटिहै मोह महातम ॥ ४ ॥

जमुनाजी के पद (सारँग)

जमुना देवी को न भलाई ।

नाम रूप गुन लै हरिजू को, न्यारी अपनी चाल चलाई ॥
उदबस देश कियो भ्राता को, उनहिं परसि कोउ तहाँ न जाई ।
जे तन तजत तीर तुम्हरे ते, तात किरन में गैल लगाई ॥
मुक्ति बधू को करि दूत पन, अधमनि कों लै आनि मिलाई ।
आपुन स्याम आन उज्वल करि तात तपत अपु सीतलताई ॥
जलको छल करि अनल अघन को, यह सुन कै कोउ क्यों पतिआई ।
निसदिन पच्छपात पतितनको, तदपि गदाधर प्रभु मन भाई ॥ ४ ॥

भैरवी

मेरे कलिकल्मष कुल नासे, देखि प्रवाह प्रभाकर कन्या ।

वह देखो पाप जात जित तित बहे, ज्यों मृगराज देखि मृग सैन्या॥
दै पय पान पूत लौं पोषति जननि कृतारथ धनि बहु धन्या।
दीनो चहति गदाधरजू पै, चरन सरन अति प्रीति अनन्या॥२॥

जगति यमुनाभिधा जयति जगदम्बा।
पुण्यपयसा न पावयति किल कं वा॥
सुभगनवसुजलजलदाभजलपूरा।
निखिलकलिकलुषौघनिर्द्दलनशूरा॥
धर्म्मधनकामादिकामितविधायिनी।
तीरभुवितनुमुचेपरमपददायिनी॥
कल्पतरुनिकरसंकुलितमनिकूला।
स्वच्छसैकततिरस्कृतमृदुलतूला॥
स्नानकृन्निजसहस्रमयतिरस्कारिणी।
पानकारिणि मनः शुद्धिविस्तारिणी॥
सुकृतकृतिसुकृतचयसंचयविवर्द्धिनी।
कृष्णचरणाम्बुजे रतिरससंबर्द्धिनी॥
कमलकुललोचना मधुपरुचिकज्वला।
हासनिभहंसगणसततसमुज्वला॥
तट निकटफुल्लवनचित्रपटधारिणी।
कोकरवबागमलफेनवरहारिणी॥
विशदवृन्दावनपरागभरंजिता।
बहुविहगरम्यरणिताभरणसिंजिता॥

भंगभ्रुकुटीभृंगसूचितानुग्रहा ।
परमवत्सलतया सर्वजनसुग्रहा ॥
सारसनिनादनिभसारसनिनादिनी ।
सुखदशिकरभरस्पृग्जनाह्लादिनी ॥
सप्ताब्धिभेदिनीसप्तसप्त्युद्भवा ।
हरिचरनरतगदाधरविरचितस्तवा ॥ १२ ॥

बंसी पटरानी भई। (वंशी के पद)

उपजी सरस सुवस जानि करि हरि गहि पानि लई ॥
सोवत श्याम लगाई हृदैसों छिन छिन प्रीति नई ।
याहीसों नित मती करत प्रिय दृष्टि न अनत गई ॥
पीवति अधर करति रति कूजित गति विपरीति ठई ।
बारबार मुंह लावत इहि सब मर्जादा वितई ॥
करे हैं अधीन त्रिलोक लोक याकी कीरति जगत छई ।
रसवस भए गदाधर प्रभु यह करी जगत विजई ॥
विनसारजेतोभारहैहो या मुरली मैं ।
एतोतो न देख्यौ वा महागिरवर में ॥
वाएही उचाइ रहे सातदयोस करमें ।
जबहि संभारि हरिधरतहु हुकरनि कैसेहु२ आइलागति अधर में।
एकसुहाग याहि दीनो है गदाधर प्रभु राख्यो अभिमान इहि
थिर मै नचर मैं ॥

राग मारु

गोपाल लालकी बांसुरी माई विधिहू तें प्रबल प्रवीन ।
याने जगत कियो आधीन ॥ टेक ॥
चारि बदन उपदेश विधाता, थापी थिर चर नीति ।
आठ बदन गर्जति गर्वीली, क्यों चलिये यह रीति ॥
विपुल विभुति लई चतुरानन, एक कमल करि थान ।
हरिकर कमल जुगल पर बैठी, बाढ्यो यह अभिमान ॥
एक बेर श्रीपति के सिखये, उन लिय सब गुन गन गान ।
याके तो नँदलाल लाड़िलो, लग्यो रहत नित कान ॥
एक मराल पीठि आरोहन, विधि भयो प्रबल प्रसंस ।
इनतौ सकल बिमान किये, गोपी जन मानस हंसा ॥
श्रीबैकुंठनाथ उर बासिनी, चाहत जा पद रैन ।
ताको मुख सुखमय सिंहासन, करि बैसी यह ऐन ॥
अधर सुधा पी कुल व्रत टार्यो, नहीं सिखा नहिं ताग ।
तदापि गदाधर नन्द सुवन को, या ही सौं अनुराग ॥२४॥

स्मरण तथा वन्दना के पद

चिन्तय चित्त ! चिरं हरिचरणम् । गोपवधूजनहृदयाभरणम् ॥
स्वांकालंकृत वृन्दारण्यम् । निजदयिताकुचकुंकुमधन्यम् ॥
कालियविषधरफणिमणिदलनम् । स्तुतिसुपरिस्कृतपन्नगछलनम् ॥
तरूणारुण कमलोदितकान्तम् । नखदीधितिहृतहृदयध्वान्तम् ॥

प्रणयिसु कामं ददतं सततम् । वनभुवि गोगणमनुगच्छन्तम् ॥
वृन्दारकवरवृन्दैर्वन्दयम् । वेदान्तार्थविदामभिनन्दयम् ॥
कमलासनमनसापरिमेयम् । श्रुत्यागेयंगिरिशध्येयम् ॥
संपदि विपदि कदापि न हेयम् । स्तुत्तुरतेमतती रिह देयम् ॥
स्मर नर शश्वत्पकंजनाभम् । विद्युद्वसनं नीलघनाभम् ॥
मौलिमिलन्मणिमञ्जुलवेशम् । स्निग्धश्यामलकुंचितकेशम् ॥
रत्नमयातुलकर्णाभरणम् । कमलदलायत चचंलनयनम् ॥
सुरभयहरणं व्रजजनशरणम् । धन्याख्याताम्बुजनिभवरणम् ॥
भालमिलद्वरकुकुंमतिलकम् । चन्दनचित्रितवक्षःफलकम् ॥
स्फुरदरुणाधरविनिहितवेणुम् । मुनिदुर्ल्लभचरणाम्बुजरेणुम् ॥
कण्ठतटे मणिराजमरीचीम् । बिभ्राणं शुभशोभावीचीम् ॥
तारावलिनिभमौक्तिकहारम् । संभृतसौन्दर्य्यामृतसारम् ॥
विततोरसिविलसद्वनमालम् । कटितटघटितसुकिंकिणिजालम् ॥
वलयागंदसंगतभुजदण्डम् । दलुनकुलान्तविधावतिचण्डम् ॥
चरणरणितमणिमयमंजीरम् । सच्चिन्सुखघनसुभगशरीरम् ॥
त्रैलोक्याद्भुतशोभारुचिरम् । गोपतनुं नर चिन्तय सुचिरम् ॥
दुर्गतबन्धुं करुणासिन्धुम् । विश्वहितं हृदिकुरु जनबन्धुम् ॥
वनभुविसततं खेलानिरतम् । गोगणसहितं सुरमुनिमहितम् ॥
क्रीडन्तं निजसखिभिः साकम् । गोपवधूजनपुण्यविपाकम् ॥
अशरणशरणं भवभयहरणम् । प्रणमगदाधरगिरिवर धरणम् ॥

राग भैरवी

सुमिरहु बरनागर बर सुन्दर गोपाललाल ।
सब दुख मिटि जैहै वैचित लोचन विशाल ॥ ध्रु ॥
अलकनिकी झलकनि लखि पलकनि गति भूलिजाति
भुवविलास मन्दहास रदनछदन अतिरसाल ।
निन्दितरवि कुंडलछविगंडमुकरझलमलात
पिच्छगुच्छ कृतबंतस इन्दुविमल विन्दुभाल ॥
अंग अंग जित अनंगमाधुरी तरंग रंग विमद
मंद गयंद होत देखत लटकीलीचाल ।
रतन रसन पीतबसन चारुहारवरसिंगार
तुलसीरचित कुसुमखचित पीनउर नवीनतमाल ॥
व्रजनरेशबंसदीप वृन्दावनवरमहीप
श्रीवृषभान नाम पात्र सहज दीन जन दयाल
रसिक रुप भूपरासि गुन निधान जान राय
गदाधर प्रभु युवतीजन मन मानसर मराल ॥ ३ ॥

जैति श्री

मोहि तुम्हारी आस । जिनि करहु न निरास ॥
मन मेरो बंध्यो मोहपास । स्वारथ पर सौंधो कैसो दास ॥
मोहि अपनी करनी के त्रास । निसि वीतति भरि भरि लेत स्वांस ॥
रचि रचि कहिये बाते पचास । मनकी मलिनता को कहु न जास ॥
जौ चितवैं नेकु श्रीनिवास । गदाधर मिटहि दोषदुख अनायास ॥

(देव गन्धार)

अहो गोपाल कृपालय प्यारे ।
सुमिरत हियो भरयौई आवत गुनगुन मधुर तिहारे ॥
कहावह बकी कहा जननी गति कहा अहि कहा पदअंक ।
करत प्रनाम छिमे सुरपतिके वे अपराध निसंक ॥
पावक पान दुसह नहि लागत ज्यौं निजु जनको पीर ।
बच्छबाल जब व्याल गिले तब ह्वै ही गये अधीर ॥
एसे तुमसों कपटु दिवानिसि यह मेरो अति दोष ।
एते पर हौं मनमत जानत करत जितौ परिपोषु ॥
तजि तुमसे अतिहितू गदाधर डहकायो बहु ठोर ।
अबजिनि होइ कबहु या कुपनहि तुम छाड़े गति और ॥

(राग श्री)

नमो नमो जय श्रीगोविंद ।
आनँद मय ब्रज सरस सरोवर, प्रगटित विमल नील अरबिंद ॥
जसुमति नीर नेह नित पोषित, नवनव ललित लाड़ सुखकन्द ।
ब्रजपति तरनि प्रताप प्रफुल्लित, प्रसरित सुजस सुवास अमन्द ॥
सहचरि जाल मराल सङ्ग रँग, रसभरि नित खेलत सानन्द ।
अलि गोपीजन नैन गदाधर, सादर पिवत रूप मकरन्द ॥ ५ ॥

॥ दण्डक ॥

जयति श्री राधिके सकल सुख साधिके
तरुनि मनि नित्य नवतन किसोरी ।

कृष्ण तनु लीन घन रूप की चातकी
कृष्ण मुख हिम किरन की चकोरी ॥
कृष्ण दृग भृंग विश्राम हित पद्मिनी
कृष्ण दृग मृगज बन्धन सुडोरी ।
कृष्ण अनुराग मकरंद की मधुकरी
कृष्ण गुन गान रस सिंधु बोरी ॥
एक अद्भुत अलौकिक रीत मे लखी,
मनसि स्यामल रंग अंग गोरी ।
और आश्चर्य्य कहूं मै न देख्यो सुन्यो,
चतुर चौषठिकला तदपि भोरी ॥
विमुख परचित ते चित्त जाको सदा
करत निज नाह की चित्त चोरी ।
प्रकृति यह गदाधर कहत कैसे बनै,
अमित महिमा इतै बुद्धि थोरी ॥११॥

गौरी

नन्द-कुल-चंद वृषभानु-कुल-कोमुदी
उदित वृन्दाविपिन विमल आकासे ।
निकट वेष्टित सखी वृन्द वर तारिका
लोचन चकोर तिन रूप रस प्यासे ॥
रसिक जन अनुराग-उदधि तजि मरजाद
भाव अगनित कुमुदिनी गन विकासे ।

कहि गदाधर सकल विस्व असुरनि बिना
भानु भव नाप अग्यान न विनासे ॥६॥

राग सोरठ

मोहन बदन की सोभा ।
जाहि देखत उठति सखि आनंद की गोभा ॥
नैन धीर अधीर कछु कछु असित सित राते ।
प्रिया आनन चंद्रिका मधु पान रस माते ॥
बंसिका कलहंसिका मुख कमल रस राची ।
पवन परसत अलक अलिकुल कलह सी माची ॥
ललित लोल कपोल कुंडल मधुर मकराकार ।
जुगल शिशु सौदामिनी जनु नचत नट चटसार ॥
बिमल जलक सुढार मुक्ता नासिका दीनों ।
ऊँच आसन पर असुर-गुरु उदौ सो कीनों ॥
भौंह सौहनिका कहौं अरु भाल कुमकुम बिंदु ।
स्याम बादर रेख परि मनु अवहिं ऊग्यौ इन्दु ॥
लग्यौ मन ललचाइ तातें टरत नहिं टारचौ ।
अमित अदभुत माधुरी पर गदाधर वारचौ ॥४॥

भूपाली

मद गजराज कीसी चाल ।
बार भुज दण्ड सुंडकी सोभा हरि लीनी नन्दलाल ॥टेक॥

चूरन कच कुंचित अनंग अकुंस से लटकत भाल ।
चौंर चारु अवतंस मंजरी मद कन श्रम जल जाल ॥
गन्ध अंध आवत अलिघेरे गुंजत मंजु मराल ।
मोरपंख फरहरत वात वस जनु ढलकति है ढ़ाल ॥
घनन घनन घंटिका रटित कटि सुन्दर सुखद सुताल ।
खनन खनन खनन नूपुर शृंखलसे बाजत लजतमराल ॥
युवती हृदै सरस सरसी मैं खेले हैं चिरकाल ।
न्याइनि अंग अंग अरुझाने उनके मन सैवाल ॥
धातु बिचित्र चित्र तन शोभा कल कलदावन माल ।
हठिकुल धर्म ढोह ढ़ाहत है रदन कटाच्छ विसाल ॥
मुरली रव गुंजार सुनतही कंपति चित वृजबाल ।
रिसरुसनें गदाधर ह्वै गये बन बेली बेहाल ॥

(गोरी) देखिरी आवत गोकुल चंद ।
नखसिख प्रति बनबैस विराजत हरत दुखदंद ॥
आपुनहीजु बनाइ बनाए गायन के पद छंद ।
तेई मुरली माझ बजाव मधुर मधुर सुरमंद ॥
अगनित वृज युवतीन मन बांधत दुहूं भौहं दृढ़फन्द ।
पोषतनेंन मधुपकुल एकहि बदन कमल मकरन्द ॥
सहज सुबास पास नहि छाडत गोपगाई अलि वृन्द ।
अंग अंग बलिजाइ गदाधर मूरति मे आनन्द ॥

अनुराग के पद

सखी, हौं स्याम रंग रँगी ।
देखि बिकाइ गयी वह मूरति, सूरति माहिं पगी ॥
संग हुतो अपनो सपनो सो, सोइ रही रस खोई ।
जागेहु आगे दृष्टि परै सखि, नेकु न न्यारो होई ॥
एक जु मेरी अँखियनि में निसिद्योस रह्यो करि भौन ।
गाइ चरावन जात सुन्यो सखि, सोधौं कन्हैया कौन ।
कासो कहौं कौन पतियावै, कौन करै बकवाद ।
कैसे कै कहि जात गदाधर, गूँगे को गुरु स्वाद ॥

बिहाग— जो मन स्याम-सरोवर न्हाहि ।

बहुत दिनन की जरयो बरयो तूँ, तबही भले सिराहि ॥
नयन बयन कर चरन कमलसे, कुंडल मकर समान ।
अलकावली सिवाल जाल तहँ, भौंह मीन मो जान ॥
कमठ पीठ दोउ भाग उरस्थल, सोभित दीप नितंब ।
मनि मुकुता आभरन बिराजत, ग्रह नछत्र प्रतिबिंब ॥
नाभि भँवर त्रिवली तरङ्ग, झलकत सुंदरता वारि ।
पीत बसन फहरानि उठी जनु, पदुम रेनु छबि धारि ॥
सारस सरिस सरस रसना रव, हंसक धुनि कलहंस ।
कुमुद दाम बग पङ्गति बैठी, कविकुल करत प्रसंस ॥
क्रीड़ा करति जहाँ गोपी जन बैठि मनोरथ नाव ।
बार बार यह कहत गदाधर, देह सँवारौ दाँव ॥

अथ रूप माधुरी

गिरिधरलाल जू अतिराजैं ।
देखत अंग अंग की शोभा कोटिमकरधुज लाजै ॥
उन्नत वाम भाग बाहु कर पल्लव मनि मुद्रिका बिराजै ।
जनु सुरराज गर्व पर्वत भेदन कौं चमकै गाजै ॥
जननी जनक की हियो हुलसावत वल आडम्बर साजैं ।
गोपी बदन कमल वनमें दृग भ्रमर भ्रमत भ्राजै ॥
हसि हसि कहत सखन सौं बातें तव जु दसन छबि छाजै ।
प्रगट उदोत गदाधर मन में दीख तिमर भय भाजैं ॥

सोरठ

राधे, रूप अद्भुत रीति ।
सहज जे प्रतिकूल तो तन, रहे छाँड़ि अनीति ॥
कचनि रचना राहु ढिगही, मुदित बदन मयंक ।
तिलक बान कमान दृग मृग, रहैं निपट निसंक ॥
रतन जतननि जटित जुग ताटंक रबि रहे छाज ।
तदपि दूनी जोति मोतिन, मण्डली उडुराज ॥
अधर सुधर सुपक्क बिम्बा, सुभग दसन अनार ।
धीर धरिकै कीर नासा, करत नहिं संचार ॥
नील पट तम जोन्ह तन छबि, संग रङ्ग रसाल ।
दोक जुगल उरोज परसत नाहिं भुजा मृनाल ॥

निकट कटि केहरी पै, गज गति न मैटी जाति ।
प्रगट गज गति जहा जंघा, कदलि रुचि हुलसाति ॥
गदाधर बलि जाइ बूझत, लगत है मन त्रास ।
इति संपति सहित क्यों विय, देत नाहि मवास ॥

(सोरठ) राधेजूके बदन की शोभा ।

जाहि देख मयंक थाक्यो कृष्ण मन लोभा ॥
सीस फूल सिर उपर सोहे भाल कुमकुम बिंदु ।
मानो गिरि सुमेरु उपर बस्यो रवि अरु इंदु ॥

दिये आड कुरंगमदकी मलय केसर सींच ।
मानो सुरगुरु उदय कीनो हेमगिरि के बीच ॥

तनक तरोना श्रवन सोहे कनक रत्न जराय ।
मानौं रविकी किरण पसरी रही भूपर छाय ॥

चंचल नयन कुरंग मानों सजल जलद जल एन ।
चिते बांकी चितवनीमें उभय मारे मैन ॥

सुभग नासावेसर सोहे स्वाति सुत राजें ।
निरख मुक्तन येही शोभा असुर गुरु लाजें ॥

अधर दशन तंबोल राजत सहज बिहसत बाम ।
मानों दामिनी दशोदिशकी बसत एक ही धाम ॥

निरख प्रिया तनकी यह शोभा चिबुक शांवल बिंद ।
मानों छबिकी जालमें पर्यो अलिसुत फंद ॥

अंग अंगसो प्रेम बरखत सकल सुखकी मूरि।
राधेजूके चरणकी रज गदाधर सिर भूरि ॥

राग सारंग

लाडिली गिरिधरन पिया पिय नैननि आनन्द देतिरी।
अति अनुपम गुन रुप माधुरी बरबस सरबसु लेतिरी ॥ ध्रु॥
वदन सदन सोभा को सोहै उपमाको कोऊ नाहिरी।
चन्द अमन्द लाज अर चितापरी कलंक मिसि छांहरी ॥
कच रचना में मांगा मोतिन की उपमा कहो विचारिरी।
अपनेहि बल मनहु निसाकर करत राहु विदारिरी ॥
कनक दण्ड केसरि कोटि को लटकति लट भलि भांतिरी।
मानहु सुभग सुहाग भागकी बिजै धुजा फहरातिरी ॥
मोह मोहनी यन्त्र लिखि लिपि कवि काहूं वन बखानिरी।
जाके निरखत मन मोहन कर मुरली गिरत न जानरी ॥
अंजनरञ्जित नैन सलोने सोभा हरिमन खागीरी।
स्याम रुपके पिवत पिवत नित सरस श्यामता लागीरी ॥
नासारुचिर रवारी सोहै उपमा अन अव रेखिरी।
लरत चकोर चंपल लोचन ढिग पावक कनका देखिरी ॥
हसन लसन अधरण अरुणाइ अति छवि बढ़ी अपाररी।
मनहुं रसाल मृदल पल्लव पर वगरायो घन सारररी ॥

रचि अवतंस रसाल मञ्जरी फवी कपोल सुजातरी ।
मानहुं मैन मूर बैठ्यौ करि हरि मन मृग की घातरी ॥
खुटिला खुभी जराइ जग मगत मो पै जात न भाखिरी ।
मनहु मार हथियार आपनें एक ठोर धरि राखेरी ॥
कंठ कपोत पोति पुंजनि मे मनि मनि आं रंग रातेरी ।
मानहुं उतरि धरनि सुत यमुना नीर अन्हातेरी ॥
कंटकी सिरी दुलरी वरग्रीवां अति सुख सोभा सारी ।
नलिनी दलके जलज्यौं झलकत गज मोतिन के हारी ॥
चौंकि चमक कचुंकी सारी कारी राते रंगरी ।
अरुन किरनि रही छाइ उदधिते निकसत प्रात पतंगरी ॥
अंगद बलय मुद्रिका नख छवि सोभित भुजा सुढाररी ।
जनु आचूल मूलत फूली कनक लता की डाररी ॥
पीन उरोज कुंभ रोमावलि राजति ता अति सुंदरी ।
मानहु मदन मतुंग धस्योहै नाभि अमृत के कुंडरी ॥
उपमा एक ओर मन आवत बुधिबल करत विचाररी ।
मानहु सैल सिंधुतें निकिसी नील यमुन जल धाररी ॥
गुरु नितव किंकिनी कनककी रुनझुन रावरी ।
मानहु मिले करत कोलाहल कलविंकनिके साबरी ॥
सुनियति मनि मंजीर धीर धुनि उपमा न आवै हाथरी ।

मन मोहन मोहनकों जनु गुनियत मोहन गाथरी ॥
अरुण चरण पंकज नख दीपति जावक चित्र विचित्ररी ।
फूली सांझ माझ मानौ जे झलकत विमल नक्षत्ररी ॥
अद्भुत अखिल लोककी सोभा रोमरोम रहि पूरिरी ।
गति विलास हिय हारिमानि गजडारत सिरपर धुरिरी ॥
करि साहस यह कहत गदाधर सहि कविकुल उपहासरी ।
आपनें प्रान नाथ मिलि स्वामिनि मोमन करहु निवासरी ॥

मोरी—आजु ब्रजराज को कुँवर बनते बन्यो,
देखि आवत मधुर अधर रंजित बेनु ।
मधुर कल गान निज नाम सुनि स्रवन पुट
परम प्रमुदित बदन फेरि हूँकति धेनु ॥
मद विघूर्णित नैन मंद बिहँसनि बैन
कुटिल अलकावली ललित गोपद रेनु ।
ग्वाल बालनि जाल करत कोलाहलनि
सृंग दल ताल धुनि रचत संचत चैनु ॥
मुकुट की लटक अरु चटक पटपीत की
प्रगट अंकुरित गोपी मनहिं मैनु ।
कहि गदाधर जु इहि न्याय व्रज सुंदरी
विमल वनमाल के बीच चाहतु ऐनु ॥

मानके पद

आजमाई रिझाई सारंग नैंनी ।

अतिरस मीठीताननि काननि काननिमें अमृत सो बरसत
अखिया जल झलमलाइ आई भई तन पुलकनि श्रेणी ॥
आपु तकति करताल देत दीनो न जाइ मुरझाइ भाइ मीनी गजगैनी
प्रेमपागि उरलागि रही गदाधर प्रभुके पिय अंग अंग सखदैनी

मानिनी की जियै मानु नहि स्यामसों ।

सफलकिनकरहि निज दिब्यदामिनिप्रभा नीलनवजलद अभिरामसों
देखि उर आपनें ज्यों बिम्ब जीत इंदुनीलमनिकलधौत दामसौं
सुख सखीजन जुगल जगमगत जोइजि होइ अति आरति कामसौं
लाल गोपाल मन ध्यान तेरो धरें रसन रट प्रगट तव नामसौं ।
असुख यह मोहि दहन विचल नाहु नेह नागरि प्रकृति वामसौं ॥
कहत बडी वेर भई अर्धजामिनि गई आइ रह्यो भोर युग यामसौं ।
अब धरनि धर पाइ बूले गदाधर जाइ मानि रुचि कुंज नव धामसौं ॥

भज भामिनी कमल लोचन कुवर आजु ।

कमल कोमल दलनि सहज सज्जा रची साजि तकत नव पंथ युवराजु ॥
मान वलिहार करिडारि नंदलाल पर आनमन मिलन को साजु ।
लाल तमाल रति राज गज बस परे अब नहीं बिलंबसों काजु ॥
सुनत सखि वचन मन प्रेम बिम्बल भई उठि चली तन सुरति बाजु ।
मिलत नव कुंज मंदिर गदाधर भयो हंस हंसी सुख समाजु ॥

कल्याण

यातें हो कहत करण केलि ।

शुनिरी सखी तेरे मन मंडप बोंडी यौवन बेलि ॥

प्रीति कुसुम आनन्द मकरन्द हरही आलि अलि भेलि ।

गदाधर प्रभु अंग संग सुफल फलि तुसखिसुमुखि सहेली ।

दानके पद (राग सूहो)

जौन चले कुलकर्म्म कहा यह रीति गनि ।

कनक कूट द्वै दै अपने बबा ज्यौ और गाइनिके टोल बोलि द्विज ऐसे कहांभऊ दानी ॥ १ ॥ याहा धन गहनौ पहि रैंगी सुत की संपति व्रजपतिजूकी रानी । भलैं हो भलैं गदाधर के प्रभु प्रभु जीयकी बात मै जानी ॥ २ ॥

अथ रासकेपद

नचत गोपाल फणिफणा रंगे । मनहु मनि नील के खंभ ऊपर सिखी नृत्य आरम्भ किय अति उतंगे ॥ ध्रु ॥ प्रथम तरुतुंग चढ़ि झंप यमुना लई सुभग पट पीत कटि तट लपेटे । एक घनतें निकासि और घनकौं चल्यौ श्याम घन मनहु चपलाहि भेटे ॥ १ ॥ बहुरिफिरि झगरि चढ़ि सीस तंडव रच्यौ परसि पदतलनि मनि रंगु सुहायो । चरण पट तार विष झार झरहत जतु ते लतपतेक हू नीरनायो ॥ २ ॥ दुसह

हरि भारतें कंठ आये लटकि परसि करै कवि सकल उपमा विचारा। मनहु नखचन्द्र की चन्द्रिका त्रासते उरपि नीचीधसी तिमिर धारा ॥ ३ ॥ गगन गुणगननि गुण गान गंधर्व करै जै करै देव मुनि पहुप वरषै। तरनिजा तीर मरमीर आभीर कुल धीरमन माझ धरि अधिक हरषै ॥ ४ ॥ विवश भूषण वसन सिथिल रसना कसन शरण आई जबहि नागनारी। कान्ह करुणा करी चिन्ह पद सिर धरे मेटि खगराज की त्रास भारी ॥ ५ ॥ पूजि हरि कों चल्यौ नाग रमणकदीप श्यामजू मुदित जल तीर आये। कहि गदाधर जु आनन्द कुलाहल भयौ सकल व्रजजन निकिरि प्राण पाये ॥ ६ ॥

राग सारंग

संगीत रस कुशल नृत्य आवेस वश लसति राधा रास मंडल विहारणी। दिव्यगति चरण चारण चक्रवर्त्तिनी कुवर श्यामल मनोहरण मन हारिणी ॥ १ ॥ लोचन विलास मृदुहास मन उल्लास नन्द नन्दन मनसि मोद विस्तारिणी। मृदुल पदविन्यास चलति वलयावली किंकिणी मंजु मंजीर झन कारिणी ॥ २ ॥ रुप अनूपम कांति भांति जाति न वरनी पहिरि आभरण षोडश सुशृंगारिणी। मृदंग वीना तारस्वर पंच संचार चारुता चातुरी सार अनुसारिणी ॥३॥ उघटमुख सबदपीयूष वर्षित मनौ सींचि पीय श्रवणतन पुलक

कुल कारिणी । कहि गदाधरजु गिरिराज धरतैं अधिक विदित रस ग्रंथ अद्भुत कला धारिणी ॥ ४ ॥

करत हरि नृत्य नवरंग राधासंग लेत नव गति भेद चर्च्चरी तालके । परस्पर दर्श रसमत्त भये तत्त थेई बचन रचना सुसंगीत सुरसालके ॥१॥ फरहरत बर्हिवर ढ़र हरत उरहार भर हरत भ्रमर वर विमल बन माल के । खिसत सित कुसुम शिर हसत कुंतल मनौ हुलस कल झलमलनि स्वेदकण भालके ॥ २ ॥ अंग अंगनि लटक मटक भंगुर भ्रुकुटि पट कपट ताल कोमल चरण चालके । चमक चल कुंडलनि दमक दशनावली विविध व्यंजित भाव लोचन विशाल के ॥ ३ ॥ बजत अनुसार दृमि दृमि मृदंग निनाद झमकि झंझंकार किंकिणी जाल के । तरल ताटंक तडकित तडित नील नव जलदपै यौं विराजति प्रिया पास गोपाल के ॥ ४ ॥ बृजयुवती जूथ अगणित वदन चन्द्रमा चंद भये मन्द उदद्योत तिहिं कालके । मुदित अनुराग वस राग रागिनि तान गान गत गर्व्व रंभादि सुरबाल के ॥ ५ ॥ गगन चर सघन रस मग्न वर्षत फूलवारि डारत रत्न यत्न भरिथाल के । येक रसना गदाधर न वरनत बनै चरित अद्भुत कुवर गिरिधरन लालके

केदार

आजु मोहन रची रासरस मंडली । उदित पूर्ण निशानाथ

निर्मल दिशा निरखि दिनकरसुता सुभग पुलिनस्थली ॥ध्रु॥ बीच हरि बीच हरिणाक्षि माला बनी, तरुण तापिच्छ तरु जनु कनक कदली रली। पवन वश चपल दल कुलनिसी देखियति चारु हस्तक भेद भांति भारी भली ॥ १ ॥ चरण विन्यास कर्पूर कुंकुम रेणु पूरि रही दिश विदिश कुंजवन की गली। कुन्द मन्दार अरविन्द मकरंद मद कुंज पुंजनि मिले मंजु गुंजत अली ॥ २ ॥ गान रस तानके बाणवेध्यौ विश्वविषपानजानि अभिमान मुनि ध्यान रति दलमली। अधर गिरिधरण कैं लागि अनुराग की जगत बिजई भई मुरलिका काकली ॥ ३ ॥ रसभरे मध्यराजत खरे देखि दोऊ नंदनन्दन कुवर वृषभानकी लली। देखि अनिमेष गदाधरजू लोचन युगल लेखि जीय अपनी भागमहिमा फली

राग बिलावल

निर्तत राधानन्दकिशोर।

ताल मृदंग सहचरी बजावत बिच बिच मोहन मुरली कलघोर ॥

उरप तिरप पग धरत धरणिपर मंडल फिरत भुजन भुजजोर।

शोभा अमित विलोक गदाधर रीझ रीझ डारत तृण तोर ॥

विवाह केपद (रागजैतश्री)

दुलह सुंदर श्याम मनोहर दुलहिनि नवल किशोरी जू।

मंगल रुप लोकलोचनकौं रचो विधाता जोरी जू ॥

रास विलास ब्याह विधि नित्य प्रति थिरचरमनआनन्दाजू।
शारद निशा दिशा सब निर्मल डहडहे पूरण चन्दाजू॥
यमुना पुलिन नलिन रासरंजित सुभग संवारी चौरीजू।
बोलत मधुर वेदवाणी सी मिले मौंर अरु मौंरी जू॥
गोपीजूरी जनु कंजनि कलिनिको आमर मोर बनायौ जू।
झलकत विमल नक्षत्र मुक्तासे गगन बितान तनायौजू॥
मधुर कंठ कोकिला सवासिनि गीत सरस स्वर गावैजू।
बाजेद्वार पर सकल देव मुनि बहु बाजंत्र बजावैजू॥
आस पाश लहलही बनबेली जुरी जानौ कौतुक हारीजू।
कुसुम नैन अलि अंजन दीनो नव पल्लव तन सारीजू॥
सारस हंस कपोत कीर द्विज शाखागोत्र उचारैंजू।
नाचत मयूर नौछावरि करिकरि द्रुमनिज फुलनि डारैजू॥
फूले द्रुम कुसुमन की शोभा असीत पीत सितराते जू।
चोवा चंदन बंदन केसरि छिरके मानौ वरातेजू॥
इहिं विधि सदा विलास रासरस अगणित कल्पबितायेजू।
ते सुख शुक शिव शारद नारद शेष सहस्र मुख गायेजू॥
और कहां कहि सकै गदाधर मोहन मधुर बिलासाजू।
रसना सहस्र शुद्ध करिवेकौं गावत हरिके दासा जू॥

काफी

सुन्दर सेहरो बन्यों । लालजूको सेहरो बन्यों ॥ टेक ॥
सेहरो हरि दुलह के कुसुम भांति भांति ।
जाहि देख लघुलागत बने मोतिनकी कांत ॥
श्रवणन हरि दूलहके बने हैं करणफूल ।
छबि रबीकी जग मगति जोति न समतूल ॥
कुंकुम को तिलक बन्यों हे ललाट ।
मानो यहां विधि सवारी मनसिजकी बाट ॥
मुक्ताफल नासाको सबको चित चोरें ।
हसन दसन रसन ज्योति अधर रंग तंबोरें ॥
दुलरी गज मोतिनकी मध्य माणिक दमके ।
मानो नक्षत्र पंक्तिमें मंगलकी चमके ॥
भुज भुजंग अंगकी छबि कहा कहुं ।
मानो पहुंची रुचिर रचि रीझ रीझ रहुं ॥
बरण बरण फूलन की माला मन मोहे ।
रति पति के झुलनासों झुलना उर सोहे ॥
कटितट पर किंकिणी रुण झुण राव ।
कूजत कल हंसन कों नूपुर सुभाव ॥
श्री वृन्दाबन भूमि मंडप बव कुंज ।

बदत बेदबाणी सी मधुपन के पुंज ॥
दुलह व्रजराज कुंवर दुलहनि व्रजनारी ।
शरद निशारास विलास सबही सुखकारी ॥
कोकिल कल गावत हें मंगल कल गीत ।
बाजे द्वार देव मुनि पूजी सवरीत ॥
फूली द्रुमलता बेली श्वेतपीतराती ।
चंदन वंदन केसर सो चरचे बराती ॥
यह सुख जो हृदय रहे तो मिटे मन दाहु ।
कहत हैं गदाधर चित इत उत नहिं जाहु ॥

विहागरो

प्रथम ग्रथ व्याह विधि ह्वै रही अव कंकन चारु विचार ।
हँसि हँसि कसिकसि ग्रन्थिबनावें नबल निपुन व्रजनारि ॥
ना छूटै मोहन डोर नाही वलिबांध्यो लडैती के पांनि ॥ध्रु॥
बडे हौहुतौ छोरि औहौ सुनहु घोकके राइ ।
करजोरो बिनती करौं कै छुवहि प्रियाजू के पाई ॥
यह न होइ गिरिको धरिबौ हो सुनहु कुंवर गोपीनाथ ।
बहुत कहावत हे आपुन अव काहे कांपन लागे हाथ ॥
स्वेद सिथिल कर पल्लव हरिलीनो छोरि सम्हारि ।
किलकि कहै सखि स्याम की अव तुम छोरहु सुकुवारि ।

ना छूटै लडैती डोर नाहो तुमकत करति सहाउ छाडहु निपट सयानु
छोरन देहु कुंवरि को कंकन कै बोलहु वृषभानु ॥
कमल कमल करि वरनही हो पानि पिया के लाल ।
अवकविकुल सोचे भए जए है कटीले नाल ॥
ज्यौं ज्यौं छूटै डोरना हौ त्यौं त्यौं बंधे प्रेमकी डोरि ।
देखि दुहुन की रीति सखि सब हमहि मुदित मुख मोरि ॥
लीला ललित मुकुन्द चन्दकी कर रसिक रस पान ।
अविचल होंहु सदा युगयुग यह जोरी बलि कल्यान ॥

राग बिहाग

युगल वर आवत हैं गठ जोरें ।
संग सोभित वृषभान नन्दिनी ललितादिक तृणतोरें ॥
सीस सेहरो बन्यौं लालकें निरख हसत मुख मोरें ।
निरख निरख बल जाय गदाधर छबिन बढ़ी कछु थोरें ॥

बिलाक्ल

दिन दूलह मेरो कुँवर कन्हैया ।
नित्य प्रति सखा सिंगार सम्भारत नित आरती उतारत मैया ॥
नित प्रति गीत वादित्र मंगल धुनि नित सुर मुनिवर किन्नर कहैया ।
सिरपर श्री व्रजराज विराजत तैसेई ढिग बलनिधि बल भैया ॥
नित प्रति रास विलास व्याह विधि नित सुर तिय सुमननि बरषैया ।

नित नवनव आनन्द वारनिधि नितही गदाधर लेत बलैया ॥

ज्योनार के पद

(सारंग)

श्री वृषभान सदन भोजनकौ नन्दादिक सब आयेजू ।
तिनके चरण धरणकौं कोमल पट पावडे बिछायेजू ॥
रामकृष्ण दोऊ वीर वीराजत गौर श्याम युग चंदाजू ।
जिनकौ रुप अनूप माधुरी मुनिजन मनको फंदाजू ॥
चंदन घसि मृगमद केसरिसौं भोजन भूमि लिपाईजू ।
अत्युज्वल कर्पूर चूर करि रचना चौक पुराईजू ॥
मंडप छायौ कमल कोमल दल सीतल छांह सुहाईजू ।
आसपास परदा फूलनि के माला जाल गुहाईजू ॥
सीतल स्वच्छ सकुंकुमके जलसों सबके चरण पखारेजू ।
करि आदर करजोरि सबनिसौं कनक पीट बैठारेजू ।
राजत गोपराज भूपति संगविमल बेष आभीराजू ॥
मानो समाज राज हंसनिकौ मानसरोवरतीराजू ।
धरे आनिकैं फटिक कटोरा अरु कंचन की थारीजू ॥
ढ़िग ढ़िग धरी सबनिकै सुन्दर भरि सीतल जल झारीजू ।
परोसन लागे पुरोहित हितसों जिनकी विदित बडाईजू ।
जिनकैं दर्श स्पर्श संभाषण जनौ सुरसरिता आईजू ॥

गावन लगी गीत गारीनिके सुकुमारी बृजनारीजू ।
अत्यनुपम अनुराग परस्पर वह सुख शोभा न्यारीजू ॥
ओदनकी उज्वलता मानऊँ स्वयशरुपधरि आयौ जू ।
पीतप हित प्रीति जनु इनिको प्रकट ही आय जनायौजू ॥
बरी बरा अरु खरल बिजौरा पापर पीत बनायेजू ।
वर्ण कनकके वेसनकेजु प्रकार न जात गणायैजू ॥
आम्ल वेल आंव इंदुक निबू फल भले संधानैजू ।
सद सिरा सुरभि रस और घृत सौरभ घ्राण अघानेजू ॥
सौंधावासित खोहा सिखरनि अंबरस रसना तोषेजू ।
आम्लरस तीक्ष्णरस कटुरस लौनमिले रस पोषेजू ॥
फीनिसुभग जलेबी मोदक घेवर बहु बिस्ताराजू ।
मानहु भये प्रकट भूतलपर अमृत के ये अवताराजू ॥
शीतल सुभग सुजात सुकोमल विविध भांति पक्वान्ना जू ।
तेउ प्रकार परे नही कबंहु सुरपतिहूके कानाजू ॥
और बहुत विधि षटरस व्यञ्जन परमन बारेहारेजू ।
यदयपि ये सरस्वतीकीसी मति तदपि न जात संभारेजू ॥
करि आचमन उठे सब बृजजन मनमें अति सच पायेजू ।
भूषण पट सौंधे वीरनिसौं पूजित सदन पधारेजू ॥
वह सोभा वह संपति वह सुख कापैं जात बखान्यौजू ।
जूठनि जाय उठाय गदाधर भाग्य आपनौ मान्यौजू ॥

(शीतवर्णन) यह रीतुनीकी लागत सीतकी ।
अंशन भुजधर पोढ़े पियप्यारी बात करत रसरीतकी ॥
बन गई एक रजाई भीतर राधामोहन मीतकी ।
गदाधर प्रभु हँसत सरसरितु चाह परस्पर जीतकी ॥

अथ बसंत ऋतु वर्णन

देखोऊ प्यारी कुंजबिहारी मूरति बंत बसंत ।
मोरी तरुण तरुलता तनमैं मनसिज रस वरसंत ॥
अरुण अधर नव पल्लव शोभा विहसनि कुसुम विकाश ।
फूले बिमल कमल से लोचन सूचित मनको हुलास ॥
चल चूर्ण कुन्तल अलिभाला मुरली कोकिल नाद ।
देखीयति गोपीजन बनराई मुदित मदन उनमाद ॥
सहज सुवास स्वास मलयानिल लागत सदानि सुहायौ ।
श्री राधामाधवौ गदाधर प्रभु परसत सुखपायौ ॥

अद्भुत शोभा वृन्दावनकी देखो नन्दकुमार ।
कंत बसंत जान आवत वन वेलिन कियो शृंगार ॥
पल्लव वरण वरण तन पहरे वरण वरण फल फूल ।
येतो अधिक सुहाये लागत मनो अभरण समतूल ॥
बालक बिहग अनंग रंग भरि बाजत मनो बधाई ।
मंगलगीत गायबेको जानो कोकिल वधू बुलाई ॥
बहत मलय मारुत परिचारक सबको मन संतोषे ।

द्विज भोजन भो होत अलिन के मधु मकरन्द परोसे ॥
सुनि सखि वचन गदाधर प्रभुके चलो प्रीतम पै जैये ।
नव निकुंज महल मंडप में हिलमिल पंचम गैये ॥ ५ ॥
तेरी नवल तरुणता नव बसंत । नव नव विलास उपजत अनन्त ॥
नव अरुणाधर पल्लव रसाल । फूले बिमल कमल लोचन विशाल ॥
चल भृकुटी भंग भृंगनि की पांति । मृदु हसनि लसनि कुसुमनि की कांति
भई प्रकट अल्प रोमावलि मौर । स्वास सुरभि मलय पवन भकोर ॥
फले फल उरोज सुन्दर सुठान । मधु मधुर बोलनि कोकिला गान ॥
देखत मोहे बृज कुंवरराय । बाढ़यौ मनमन्मथ चौंगुनौं चाय ॥
तोहि मिलि बिलस्यौ चाहत हैं स्याम । जाहि देखत लज्जित कोटि काम
तब चली चरण मंथर बिहार । रन भनन भनन नूपुर भंकार ॥
पुलकित गोकुल कुलपति कुमार । मिलि भयौ गदाधर सुख अपार

श्री श्री महाप्रभु गौरचन्द्र जीके होरी के पद

खेलत फाग रंग रह्यो सजनी नागर गौर गोपाल ।
जूट लटक छन्दक चटकारे शिर घुंघरारे बार ॥
ता पर माल मालती मधुकर मधुकरि करत गुंजार ॥ध्रु॥
अलकन भलक तिलक ललकत चमकत श्रुति कुंडल युगगंड ।
अमलकमल लोहित लोयन घन बरखत धार अखंड ॥
भौंह नटन नासिका निकाई बन्धु अधर सुरंग ।
दमकन दसन हसन आनन छबि बलिबलि कोटि मयंक ॥

कण्ठी कण्ठ माल उर ऊपर पचरंग हार समेत ।
बीच उर बसी जटित लालकल उदित अरुण छबि देत ॥
भुज गजराज सुण्डपर मंडित अंगद वलय सुठौन ।
पहुंचि मुदिरिन करनख मिलि शोभा वरने कविकोन ॥
कटि केहरि पहिरे पट झीनों पटुका बांधि अमेठ ।
चन्दन चरचि ओढ़ि उपरैना दरसत सरस अंगेठ ॥
अरुण चरण नखराबलि रंजन गजन पल्लव राग ।
जुगल जलजदल शेखर मानों राकेश भये दश भाग ॥
वलि पैंजनिध्वनि सुनि सज्जित अति लज्जित चटक मराल ।
कबहु चपलगति चलत ललित अति मत्तगयंदकी चाल ॥
नित्यानन्द राम सुन्दर पुरुषोत्तम आदिक संग ।
उडत अबीर गुलाल घुमड में उपजत भावतरंग ॥
अद्वैत साज समाज कुसुम जल छिरक करत किलकार ।
निरख सगण श्रीवास माधुरी रहत अपनपो हार ॥
दामोदर नरहरि सहचर मिलि गावत केलि धमार ।
मुख माढ़त झक झोरत वोरत अरगजा सहज संभार ॥
निरखि गदाधर आवेशित चित पुलकित नखसिख अंग मुरार १०
होरी रंग भर गावें सोई खिलार डफलिये बजावें ।
गाय गाय के रंग उपजावे जोई रीझे ताकों फेर सुनावें ॥
तब अरगजे मरगजे बागे नयन सैन दैं रस उपजावे ।
कहियत नायक दक्षण लक्षण आप गदाधर नाम कहावे ॥

काफी रायसौं

सकल कुंवर गोकुलके निकसे खेलन फाग ।
हरि हलधर मध्य नायक अंतर अति अनुराग ॥
ओलन बूका बंदन रोरी हरद गुलाल ।
बाजति मधुर महुवरि मुरली अरु डफ ताल ॥
कनक कलश केसरि भरि कावरि किंकर कंध ।
और कहां लगकही यै भाजन भरे सुगंध ॥
लै कुंसुमनिकी गेंदुक करत परस्पर मार ।
छूटति फैंट लटपटी बिखरि परत घनसार ॥
हँसत हंसावत गावत छिरकत फिरत अबीर ।
भीजि लगे तन शोभत रंगरंग रंजित चीर ॥
कोलाहल ग्वालनकौ सुनि गोपिका अपार ।
टोलनिटोलनि निकसी करि सोल्हे शृंगार ॥
रुप माधुरी जिनकी कवि पैं कही न जाय ।
जिनहि सची रति रंभा पगहू परति लजाय ॥
अति ही सरस स्वर गावत कोऊ झील कोऊ घोर ।
जिनही सुनत नही भावै बीणा नाद कठोर ॥
ललित गली गोकुल की होत विविध रंग खेल ।
अगर सहित कुंकुम के चली धरनि पर रेल ॥

गयौ गुलाल गगन चढ़ि भयौ ब्रज सदन सुरंग ।
मनौ खुर खेह उड़ी है सेना सजी अनंग ॥
सीचत हरि नानारंग भाजत गोपिनि गात ।
मानों उमगि बसन तैं अन्तर प्रेम चुचात ॥
लगे बनिता वदननिसौं कृष्ण गरके पंक ।
परि पूर्ण चंदनिते मनौ ल्वै चल्यौ कलंक ॥
बोलत ग्वाल बराती हमारे हरिकौहै ब्याह ।
दुलहिनि गोपकिशोरी मोहन सबकौ नाह ॥
सुनि सब गोपी कीपी हलधर पकरे जाय ।
अंजन लै दृग आंजि मुख मृगमद लपटाय ॥
पुनि सबमिलि जुरिआंई पकरे मदन गोपाल ।
कनक कदलि मंडलमै शोभत तरुण तमाल ॥
जब वृषभान दुलारी हरि भरिलीनी अंक ।
कही न जाय ता सुखकी जानौ निविपाईरंक ॥
कहि न सकै कौऊ हरि के अगणित चरित विचित्र ।
जिहि तिहि भांति गदाधर रसना करऊ पवित्र ॥ १७ ॥

राग कान्हरौ

हो हो हो सब खेलत होरी । मध्य हलधर गिरिधर की जोरी ॥
ऐसो यै परी पूर्ण पूर्णमासी । विमल जोन्ह वर्षे सुखरासी ॥

खोरिनि खोरि निकरत कलोलैं । हसत हसावत गावत टोलैं ॥
इत ये वदत मनोहर गारी । उत भुमक गावति वृजनारी ॥
उडि गुलाल छाई नभवीच । मची अगरसतकुंकुम कीच ॥
चिरजीवऊ सुंदर युवराज । युगयुग नन्दराय कौ राज ॥
कहे न जाहि गोकुल के चाय । देखि गदाधर बलि बलि जाय ॥

राग काफी

श्री गोकुल राजकुमार लाल रंगभीनै हैं ।
खेलत डोलत फाग सखा संग लीनै है ॥
चित्र विचित्र सुवेष सबै अनुकूलै हैं ।
राजत रंग सुरंग सरोजसे फूले हैं ॥
एकनिकैं करकंज हैं जोरी जराय की ।
एकनिकैं पिचकारी हैं हेम भरायकी ॥
कुंकुम घोरि भरे घट हाटकके घनै ।
पकंज पुंज पराग मृगमदसौं सनै ॥
ढोलक ढोल नीसान मुरुज रुंज बाजहीं ।
मैनके मेघ मनौ रस वृष्टिसौं गाजही ॥
ध्वनि सुनिकैं अकुलाय चली वृजनागरी ।
एकते एक महागुण रुपकी आगरी ॥
श्रीराधाकैं संग सुहाई अनेक सहेली हैं ।

कामके कानन की मानों कंचनवेली है ॥
वेष बनायेकी भांति न जाति बखानी है ।
जेती केती उपमा मनमैं विलखानी है ॥
कोकिल कूर कहा स्वर भेदहि जानई ।
कुंजर कायर कौन कहा गति ठानई ॥
कदलिनि कौ जु स्वभावपरयौ अति कंपकौ ।
हेम लयौ हठ नेम सुपावक झंपकौ ॥ १० ॥
खंजन कंजसों लागि रहे गति लासतैं ।
केहरि कंदर मन्दिर मै दुरे त्रासतैं ॥
पंकमे पंकज मूल रहे छिपि लाजतैं ।
नित्य प्रकास बिलास मिट्यौ द्विजराजतैं ॥
ताल पखावज आवज बाजत जंत्र है ।
गान मनोहर मैनके मोहन मंत्र है ॥
सो इतकी उतकी ध्वनि लागैं सुहाई हैं ।
मानौ अनंगके आंगन बाजै बधाई है ॥
गोकुल खोरीनि गोरीनि खेल मचायौ है ।
रंग सुरंग अबीरसौं अंबर छायौ है ॥
दृष्टिकरी पिचकासी भरी अनुरागसौं ।
जाय लगी बृजराज लला बडभागसौं ॥

मंजुल हास कपूरकी धूरि उडांवहीं ।
सुन्दरश्याम सुजान के नैन जुडावहीं ॥
लाल गोपाल कौ धूधरी में मुखणौ लसै ।
प्रात पतंग प्रभा मधि कंचन कंजसै ॥
आइ घिरी अबला सबलाल गोपाल कौं ।
हेमलता लपटी मनौ श्याम तमाल सौं ॥
गावति गारीनि नारीन ही झुकि प्रीतकी ।
बात बनावति आपनी आपनी जीतकी ॥
कोऊ गहैं पट पीत कोऊ बन दामकौं ।
काऊ निशंक ह्वै अंक भरैं घनश्याम कौं ॥
श्यामके सीसते स्यामाजू केसरि ढोरी है ।
दै करतारी हसैं सब हो हो होरी हैं ॥
अैसोई ध्यान सदा हरिकौ हीयैं जो रहै ।
तौपे गदाधर वाके भागकी को कहै ॥

बाढ्यो अति आनन्द खेलत फाग हरी ।
संग सकल आभीर अरगजा माट भरी ॥
ताल मृदंग उपंग मुरज डफ वेन धुनि ।
जग मोहन मुरली भई छुड़ावत ध्यान मुनि ॥
बाजत पटह निसान अरु कण्ठ ताल धरी ।
बीच मृदुल मुख चंग उपंगन सुरति करी ॥

रतन जटित पिचकारी केसर घोरि भरी ।
उडत अमित गुलाल अंबरगति अरुनकरी ॥
बोले सुबल श्रीदामाश्रीमुख स्याम कह्यो ।
चलि बरसानें जांय श्री राधा जायगहो ॥
गावत अगणित गोप चले सब रंग भरे ।
बोलत हो हो होरी श्रीराधा द्वारखरे ॥
श्रवण सुनत सब नारी द्वारन झुंड भई ।
अनेक अरगजा घोरि सनमुख स्याम रही ॥
धाय गहे बलबीर धीर मन कछु न रही ।
चंदन वंदन रोरी कपोल न लाय गही ॥
दृगसों कज्जल लावति गावति गारीखरी ।
मृगमद चंदन कुंकुम डारत माट भरी ॥
बेनी बनावत सीस हरिजू के हाथ गये ।
श्री राधा वदन निहारत वारत प्रानदये ॥१०॥
मोहन दीनी सेन बलदाऊ जाय गये ।
फगुवा देहु मंगाय युवतिनयोंजु कहें ॥
मोहन मनहिं विचारिकें बलिहि बचाय लये ।
जो मांग्यो सो दीनों मोहन मगन भये ॥
ब्रजही चले ब्रजराज गावत रंग भरे ।
देत परस्पर गारि द्वारें जाय खरे ॥ ११ ॥

यह लीला रस सिन्धु को कवि वरनि सके ।
दास गदाधर जाय निरखत नयन थके ॥ १४ ॥

रंग हो हो हो होरी खेले लाडिली वृषभान की ।
गोरे गात समात न शोभा मोहनी स्याम सुजान को ॥
अरगजा भरी फबी सारी अति कचुंकी परम सुहावनी ।
बेणी सरस गुही मृगनयनी प्रीतम हित उपजावनी ॥
वारों मृग खंजन अंजन युत नयन बने अनियारे ।
जिनकी तनक कटाच भये वस्य गिरिधर रुप उजारे ॥
विद्रुम अधर मधुर मृदु मुसकन बोलन हित रसभीना ।
लोल कपोल अमोल अलक झलकत पुलकित अति झीनी ॥
श्री मोहनजूके सुखके हित नखसिख भूषण कीनें ।
कंचन मणि रत्ननसों खचित शोभा प्रति अंगन दीनें ॥
सज सिंगार सुकुमार कुवरि खेलन निकसी अति सोहे ।
हम न भई सहचरीयां कहत लख सुरवनितान के मनमोहे ॥
संग अलि रस रंगरली एक एकते रुप उजारी ।
ऐसी कौन तरुणी त्रिभुवनमें जिन देख न देह बिसारी ॥
एक भरी शोभा सुख विलसत फूलनकी गेंदुक लीनें ।
एक लीने फूलन की छरी मृगमद केसरसों पटमीनें ॥
एक भरी अनुराग फागलीने पोहोप पराग सुहाई ।
एक लीये है गुलाल बहुवरण वरण एकदाई ॥

कंचनके कलशन केसररंग संगलीयें बहुदासी ।
और विविध रंगलिये सोहत मोहन जहां कमलासी ॥
गावत मिल मधुरेस्वरसों शिवक्रोधदग्धसुनमदन जियो ।
बाणी हूं धरणी धरयो बीणा थकित भई गयो मोहि हियो ॥
हसत लसत दरसत मुख शोभा बरषत सुखकी रासी ।
हरि मुखचन्द्र चकोर भइ व्रज युवतिनकी अखियां प्यासी ॥
सुन ध्वनि श्रवण लाल मन मोहन सखन सहित खेलनकूं आये ।
बाढ्यो अतिस्मर ग परस्पर भयोहे सबनके मन भाये ॥
दुहुं दिशतें भरभर रंगन छूटी छबिसों बहु पिचकारी ।
भीज लगे बागे अंग अंगन उत भीज लगी अंगनसारी ॥
तब आलीन झारिन भरभर बहु अबीर गुलाल उडायो ।
छै रही धूंधर सुगन्ध महा भई धरणी अरुण अम्बर छायो ॥
बाजत विविध पखावज आवज बहुरुंज मुरज डफ ताल घने ।
लटक लटक अंसन भुज धरधर नाचत गावत ग्वाल बने ॥
भरत मगावत रस उपजावत भाजत राजत भांत भले ।
मार करे नवला कमलासी भांमिनि भ्रूंह नचाइ चलें ॥
छिरकत नवल वधू नव रंगन नवल लाल तन मन हुलसे ।
मानो नवलप्रेम वेलिनपर नवलनीर नीरद बरषे ॥
मगमदभर पिचकारी लाल भरप्यारीज् सरससनेह नए ।
भीजेचीर लागे अंगन अंगन अवलोक सरससुख नयन लए ॥

तब दौरि गुलाल धूंधर कर जे चितवत चित्त विचित्र करखे ।
घेर लिये घनश्याम भामिनी दामिनीसी तन मन हरखे ॥
एक अरगजा मांडत मुख सुख भर आंजत लोचन छविसों ।
एक मांगत फगुवा भुजगहगहसों छबि कहि न परत कविसों ॥
रहिन परे उर अति सनेह भयो प्रकट कुसुमजल विमल लियो ।
केसर घोर प्रिया पिय ऊपर डारत उछ्यो हुलस हीयो ॥
बिहस उठी देताल सखी सब कहत भई हो हो होरी ।
गदाधर प्रभु यह सदा विराजौ गौरस्याम सुंदर जोरी ॥

चलोरी होरी खेलें नंदके लालसों ।
रंग रंगीलो छेल छबीलो मोहन मदनगोपालसों ॥
मृगमद अबीर अरगजा केसर फेंट जुभरी हे गुलालसों ।
रुंज मुरज आवज बाजें रंग रह्यो करतालसों ॥ २ ॥
छिरकत भरत परस्पर सब मिल लाल हसत व्रजलालसों ।
चंद्राबलि बलि रामसुख मांड्यो लटकत गजगति चालसों ॥
राधाजू अचानक आयगहे हरि वेंदी लागी भालसों ।
विप्र गदाधर मुख सुख निरखत सुख पायो दीनदयालसों ॥

राग पंचम

देखो देखो व्रजकी वीथनि वीथनि खेलत हैं हरि होरी ।
गीत विचित्र कोलाहल कौतुक संग सखा लख कोरी ॥

आई झुमि झुमि झुंडन जुरि अगनित गोकुल गोरी ।
तिनमें जुवती कदम्ब सिरोमनि राधा नवल किसोरी ॥
छिरकत ग्वालबाल अवलन पर वृका वंदन रोरी ।
अरुन अकास देखि संध्या भ्रम पुनि मनसा भई वौरी ॥
रपटत चरन कीच अरगजाकी केसरि कुंकुम घोरी ।
कही न जाय गदाधर पे कछु बुधिवल मति भई थोरी ॥

काफी

मिलिखेले फाग वनमें वल्लव वाला ।
संगखरे रसरंगभरे मवरंग त्रिभंगी लाला ॥
वाजत वांसरि चंग उपंग पखावज आवज ताला ।
गावत गारी देदे व्रजनारि मनोहर गीत रसाला ॥
सीचत रंगनि अंग भरे वढ्यो प्रेम प्रवाह विसाला ।
मेन सेन खुररेन उडी नभ छायो अवीर गुलाला ॥
कंचन बेलि करे जनु केलि परी वीच श्यामतमाला ।
धाई धरे हँसि अंक भरे छुटे केश टूटी ऊरमाला ॥
देखि थकी भँवरी सवरी मृगि मोरि चकोरि नि जाला ।
राधिका कृष्ण विलास सरोज गदाधर मानो मराला ॥

रगमदे स्यामल अंग रगमगी कुंकुम खौरी ।
रगमगी पाग सुरंग रगमगी पीत पिछोरी ॥

पवन परसि फहरात चन्द्रिका रंग बिरंगी ।
दृष्टि नहीं ठहरात देखत अतिहु बिचंगी ॥
बदन सदन आनन्द कहुं उपमा नहि पैये ।
वारत कौटिक चंद मनमैं अधिक लजैये ॥
झलकत अलकत ललाट तिय जियकी फंदवारी ।
तिलक काम की बाढ़ जनु विधि आप संवारी ॥
सोंहैं भौंहें अराल मैं अलि पंगति जानी ।
लोचन लोल बिसाल सुन्दरताकी रजधानी ॥
कुंडल मकराकार जगमग जगमग जोती ।
सुन्दर सजल सुढार सोहत नासाको मोती ॥
दसन वसन सुरसाल हसनि लसनि सुखदाई ।
दसन वसन सुरसाल उपमतउनपाई ॥
दुलरी कनक सुकान्तिता तर चंपकली है ।
उर पदकनिकी पांति राजत भांति भली है ॥
गज मोतिन को हार सोभा सुखद सुहाई ।
नील धरापर धार सुरसलिता की जनु आई ॥
भुज भुजंग अंगद छवि पौंचिनि के फूंदन ।
करि विचार हारे कवि जे सब उपमाके फूंदन ॥
कटि पट कनक किंकिनी रन झन रन झन बाजै ।

पग नूपुर धुनि सुनि सुनि कलहंसनि कुल लाजैं ॥
अंग अंग अनुपम भांति बान कबनी चटकीली ।
मद गयंद दुरिजात देखत गति लटकीली ॥
उपजत अगनित भांई व्रजजन नैंन सुखदीनों ।
मुरली मधुर बजाइ सब जगु बसकरि लीनों ॥
ऐसो रुप अनूप नैंननि देख्योई भावै ।
सकल फनीगनभूप वरनत अन्त न पावै ॥
मेरी मति अतिथोरी वरनत अतिहि अपार ।
तदपि गदाधर गावत उपजत आनन्द की धार ॥

रागं—गारी

सुन्दर स्याम सुजान सिरोमनि देउँ कहा कहि गारीजू ।
बड़े लोगके औगुन वरनत सकुच होत जिय भारीजू ॥
को करिसके पिताको निर्णय जाति पांति को जानेंजू ।
जिनके जिय जेसी बनि आवे तेसी भांति बखानेंजू ॥ २ ॥
माया कुटिल नटी तन चित यो कोन बडाई पाईजू ।
उन चंचल सब जगत विगोयो जहां तहां भइ हंसाईजू ॥
तुम पुनि प्रकट होइ बारे ते कोन भलाई कीनीजू ।
मुक्ति वधू उत्तम जन लायक ले अधमन कों दीनीजू ॥
बसि दस मास गर्भ माता के उन आसा करि जायेजू ।

सो घर छांड़ि जीभ के लालच व्हे गये पूत परायेजू ॥
बारहीते गोकुल गोपिन के सूने गृह तुम डाटेजू ।
हे निसंक तहां पैठि रंकलौं दधिके भाजन चाटेजू ॥
आपु कहाय बडेके ढोटा भात कृपनलौं माग्योंजू ।
मान भंगपर दूजैं जाचत नैंकु सँकोच न लाग्योंजू ॥
लरिकाईते गोपिनके तुम सूने भवन ढँढोरेजू ।
जमुना न्हात गोप कन्यन के निपट निलज पट चोरेजू ॥
बेन बजाय विलास कियो बन बोलि पराई नारीजू ।
वे बातें मुनिराज सभामें व्है निसंक विस्तारीजू ॥
सब कोउ कहत नन्दबाबा को घर भर्यो रतन अमोलेजू ।
गरेगुंजा सिरमोर पंखौवा गायनके संग डोलेजू ॥ १० ॥
राज सभा को बैठन हारो कोन त्रियन संग नाचेजू ।
अग्रज सहित राजमारग में कुविजा देखत राचेजू ॥
अपनी सहोद्रा आपुही छलकरि अर्जुन संग भजाईजू ।
भोजन करि दासी सुत के घर जादों जाति लजाईजू ॥
लैलै भजे राजन की कन्या यह धों कोन भलाईजू ।
सत्य भामाजू गोत में ब्याही उलटी चाल चलाईजू ॥
बहिनि पिताकी सास कहाई नैकहु लाज न आईजू ।
एते पर दीनीजु विधाता अखिल लोक ठकुराईजू ॥

मोहन वसीकरण चट चेटक जंत्र मंत्र सब जानेंजू ।
तातें भले भले करि जाने भलें भलें जगमानेंजू ॥
वरनौं कहा यथामति मेरी वेदहू पार न पावैजू ।
भट्ट गदाधर प्रभुकी महिमा गावत ही उर आवैजू ॥

अथ वर्षा ऋतु वर्णन—राग मलार

हरिकी नवघन करत आरती ।
गर्ज्जनि मंद शंख ध्वनि सुनियति दादुरवेद भारती ॥
पचरंगपाट वाति सुर धनुकी दामिनी दीप उज्यारती ।
जल कन कुसुम जाल वरषावत बगगण चमरनि ढारति ॥
घंटा ताल झांझि झालरि पिकचातक केकी कान ।
तातैं भयौ गदाधर प्रभुके श्यामल अंग समान ॥ २ ॥

मलार

देखो हरि पावस वधू बनी ।
साजि सिंगार अंग अंगनि प्रति तुमसों सनेह सनी ॥ टेक ॥
सघन घटा घूंघट में चपला चपल कटाछ विलास ।
ढरकि रहे धुरवा अलकावलि बग पंगति मृदुहास ॥
जलकनधार हारमोतिन के बिपिनि वसन पहिराउ ।
ठोर ठोर सुर चाप सुरंग छवि जगमगि रह्यो जराउ ॥
कुसुम कदम्ब सुगन्ध वदन कौ लागत अधिक सुहायो ।

चंद्रवधू रुचि रुचिर विराजत चरण महावर लायौ ॥
दादुर पौर मोर चातक पिक सुनियत भूषन राउ ।
उपजै क्यौंन गदाधर प्रभुके मन मनोजिरस भाउ ॥

मलार

सुखदवृन्दावन सुखदयमुनातट सुखदकुंज रचन रच्यौहै हिंडोरौ । सुखद कलपतरु सुखद फूलफल सुखद बहत सीतल पवन झकोरौ ॥ सुखद रंगीले संग सुखद रंगीली राधा सुखद करत केलि रतिपति जोरौ । सुखद सखी झुलावैं सुखद गीत गावैं सुखद गरज बरसत थोरौ थोरौ ॥ सुखद हरित भूमि सुखद बूंदनि रंग सुखद कोकिला कल सारस चकोरौ । सुखद बजावैं बैंन सुखद सुजस सुनि सुखद गदाधर चितकौ चोरौ ॥ १ ॥

झुलनके पद—राग बिलासी

झुलहिं कुंवरि गोपरायनिकी मध्य राधा सुन्दरि सुकुमारि ॥ध्रु॥
प्रथमहि ऋतु पावस आरम्भ । श्री वृषभान मंगाये खंभ ॥
काढ़ि भवनतै रत्न अमोल । रचि पचि रुचिर रच्यो हिंडोल ॥
वर्ण वर्ण चूनरी सुरंग । फबी लौनै सौनैसे अंग ॥
राजत मणि आभरण रमणीय । जुही गुही कबरी कमणीय ॥
ऐक ते एक सुभग सुकुमारि । मनऊ रची विधि कुंकुमगारि ॥
जगमगाति नव यौवन ज्योति । निरखि नैन चक चौंधी होति ॥

गावति सुघरि सरस स्वरगीत । डुलरावति मनमोहन मीत ॥
प्रेम विवश भई सकति न गाय । उमग्यौ आनन्द उर न समाय ॥
दुरि देखत गोकुल कुलराय । शोभा निरखत मन न अघाय ॥
मुदित गदाधर नन्दकिशोर । लोचन भये भरे के चोर ॥

मलार

रंग हिंडोलना मिलि झुलत ये फूलत दोऊ मनही मन ॥ध्रु॥
अरुणपीत वरवसन विराजत अति गोरैं सावरैं तन ।
वर्ण वर्ण सारी सुरंग शोभित गावैं आसपास युवती जन ॥
तैसीयैदामिनी दमकति छिनहिंछिन तैसे दिशदिश उमडे घन ।
तैसी ये मंदमारुत झकौर मोरपिक चातक चर चरवन ॥
जब हरि हरषि दैत झोटा बोलै विहसि प्रिया हाहा न न ।
संभ्रम सहित गदाधर प्रभु हृदै लाय लई जीवन धन ॥

देवगंधार

झुलत नागरि नागरलाल ।
मंद मंद सब सखी झुलावति गावत गीत रसाल ॥
फरहरति पट पीत नीलकें अंचल चंचल चाल ।
मनहुँ परस्पर उँमगि ध्यान छवि प्रकट भई तिहि काल ॥
मिल मिलाति अति पिया सीसतें लटकति बेनी नाल ।
जनु पिय मुकट वरहि भ्रम वस तहँ व्याली विकल विहाल ॥

मल्ली माल पियाजूकी उरझी पिय तुलसी दलमाल ।
जनु सुरसरि तरुनितनया मिलि के सुख श्रेणीमराल ॥
शामल गौर परस्पर प्रति छवि सोभा विशदविशाल ।
निरखि गदाधर कुंवरि कुंवरकों मन परचौ रस जंजाल ॥

राग—रायसो

श्री वृन्दावनकुंजमे झुलत युगलकिशोर ।
मधुर मधुर स्वर गावही प्रेम सहित व्रजगोरि ॥
कुसुमन लता सुहावनी बोलत कोकिल मोर ।
मधुप मधुर गुंजारत चहुँ दिश दादुर शोर ॥
मन्द वृष्टि जलधर करें मलयज पवन झकोर ।
झूलत अति आनन्द भरि शोभित सुन्दर जोर ॥
रीझ देत वृषभानुजा पिय के प्रान (उरज) अकोर ।
शोभा निरखत गदाधर मुदित उभय कर जोर ॥

राग मारु

निज सुख पुंज वितान कुंज हिंडोरना झुलत स्याम सुजान ।
संग स्यामाजू परम प्रवीन, जाकें सदां रसिक आधीन ॥ध्रु॥
कंचन खंभ पेच जगमग जटित जराऊ सगरी ।
पन्ना खचित पिरोजा बिच बिच कनक कलश जगमगरि
गज मोतिनसों डांडी गूंथी चौंकी चमक सुरंगी ।
रमकत झमकत गहगह लटकत मोहन मदन त्रिभंगी ॥२॥

मरुवे वेलन ध्वजा झालरी द्युति गहवर विस्तरणी ।
चोकारत झोटनमें मानों कोकिल शब्द उच्चरणी ।
चहूं ओर द्रुम वेली फूलीलता सघन गंभीर ।
जब रमकत दमकत दामिनीसी झलमल यमुना नीर ॥
सारस हंस चकोर चातक पिक नेह धरे सब पेठे ।
गुल्मलता द्रुम तनक न दीसत ऐसे जुर जुर बैठे ॥
विजय सुभाव किये घन संपति उन्हर विपिन पर आए ।
गरजत तरजत मधुर राग लिये केकी शब्द सुहाए ॥
सहचरी गान करत ऊंचे स्वर श्री वृन्दावन गाजें ।
मधुर मंजीर गगन उघटत सम सुभट पखावज बाजें ॥
नीलाम्बर पहेरे नव नागरि लालकचुंकी सोहें ।
भीज गई श्रमजलसों उरजन प्रीतम को मन मोहें ॥
लट सगमगी सलोल बदनपर सीस फूल उलटानों ।
प्रिया की चौकीसों गिरिधर को चंद्रहार अरुझानों ॥
दृग रसाल रस भरी भ्रोंह सों हस हस अर्थ जनावे ।
दुरन मुरन में चित करषत हे लालची मन ललचावें ॥
फेल रह्यो सौरभ सगरें सखी कुंकुम कृष्णागरको ।
कहां लों कहों मत्त भयो बरनो भाव गदाधर उरको ॥

राधेजू झुलत रमक रमक ।
मणि कंचनको सुरंग हिंडोरो तामध्य दामिनि चमक चमक ॥

गावत गुण गिरिधरण लालके उठत दशन छबि दमक दमक ।
बाढ्यो रंग गदाधर प्रभु जहाँ गयो है मदन सब तमक तमक ॥

चलोतो देखन जैये नंद के भवन ।
हिंडोरे झुलत प्यारी राधिका रमण ॥

पावस प्रबल ऋतु अति सुखदाई ।
थोरी थोरी बूंद बरसें नव घन माई ॥

झुलावत झोटा देदे पग पगसों प्राणेश ।
बाल सुकुमारि डरपे लघु वधूवेश ॥

डरें डरें झूलो हरि बाला बोली आन ।
कुंवरि रीझके देत मुख बीरीपान ॥

यह सुख देख देख सखी सुख पावे ।
कवि को बरण सकै गदाधर गावे ॥

राग धनाश्री

हिंडोरना झुलत युगल किसोर । हिंडोरना राजत जोवन जोर ॥
अगणित मणि माणिक लागे । जाहि निरखि नैन अनुरागे ॥
ऊपर चन्द्रातप तानें । ते मैं उनए घन जांने ॥
पचरंग पाट भवा तह झुले । जनु रंग रंग पंकज फूले ॥
मोतिन के लटकन लटकें । लखि लजित नक्षत्र गन सटकें ॥
चपल झुमझुली झलकैं । देखत नहि लागत पलकें ॥
मनि चौक रचे वर धरनी । वह सोभा जात न बरनी ॥

मृदु पवन उडति रज रुरी । कुंकुम कपूर कस्तूरी ॥
कुसुमित उपवन चहुँपासा । रस भूले भंवर सुवासा ॥
तह कीर कपोत कलापी । मृदु बोलत मधुरालापी ॥
तह यूथ यूथ व्रजनारी । जनु कुंकुम गारि संवारी ॥
वे मधुर मधुर कलगावैं । कुंवरि कुंवर कौं झुलावैं ॥
दंपति मुख शोभा देखैं । लागति नहिं नैन निमेषैं ॥
जब झूलें थोरें थोरें । आवै सुभग सुगन्ध झकोरें ॥
पटनील पीत पहराही । जनु घन दामिनी नृत्य करांही ॥
सुरललना फूलनि वरसें । बै ढिग आवन कों तरसैं ॥
रँगु बढ्यौ अति भारी । तन की गति सबनि बिसारी ॥
गुन गाई गदाधर जीजै । मनु प्रेमरंगसों भीजै ॥

मलार

रंग हिंडोरना मन मोह्यो ॥ टेक ॥
सहज वृन्दाविपिन पावस सदा आनन्द केलि ।
जहां सघन द्रुम घटा घन सौदामनि कंचनवेलि ॥
कुसुम किसलय सुरंग सुर धनु मन्द पवन झकोर ।
तहा नदत गह गह कण्ठ भरि कलकंठ चित्रक मोर ॥
मनि नील धरनि किरनि नव तृण निरखि मुदित कुरंग ।
थल कमल अल छत्राक बिच बिच बूट विद्रुम भंग ॥
भ्रमत अलि मद अंब विविध सुगंध लहरि अपार ।

तहँ कलित ललित हिंडोरना कल कल्पद्रुम की डार ॥
खचे मनि मानिक महाघन रचे चित्र विचित्र ।
देखिबे को किये अनिमिष नैन रसिकन मित्र ॥
झलमलत झलमलनि मोती मनहुं आनँद नीर ।
तिहि निरखि सुर सुनहार कोटिक लजे तजि मन धीर ॥
तहँ कुँवर कुँवरि बिलास सागर झुलत रस आवेस ।
तन बनी सुरँग कसूँभि सारी पीत बसन सुदेस ॥
नवल जोबन जोति जगमग गौर स्यामल इंदु ।
लाड़िली वृषभानु की ब्रज कुँवरवर गोविन्दु ॥
आस पास बिलासनी गन चपल चितवनि चोज ।
मनु मदन वन की लता लहलहि रही फूलि सरोज ॥
वै निपुन बीना बेनु लाल प्रमान गान विधान ।
बलि गदाधर स्याम स्यामा चरन प्रद कल्यान ॥

निकसि ठाढे सिंह पौरि । पिय सहचर कर करि ॥
सुरंग पाग बाम भाग रही धसि सुरंग तमोर
बदन सोभा तन बनी है सुरंग कुंकुम की खौरि ॥
पवन झकोर छोर कटिपट के लटकि लटकि लहरें
सीलेत देखे परी तनमन मनसिज की रौरि ।

यदपि चली बचि सकुचि सखी मोही
मुकुंद कहा करौं कल्यान दृग लगी दौरि ॥

:समाप्तेयं बाणी: